bible educational services

शिक्षक केलिए दिशा-निर्देश

बाइबल टाइम लेवल 3 & 4

A सीरीज़

पाठ 1-6

bes INDIA
bible educational services

P.O Box - 9, MOOKANNUR P.O., 683577, Ernakulam, KERALA
E-mail : besindia1@gmail.com, www.besweb.com

शिक्षक केलिए दिशा- निर्देश।

यह दिशा-निर्देश उन शिक्षकों केलिए प्रकाशित किए है जो बाइबल टाइम सिखाते है। इस पुस्तिका को लेवल 3 लगभग 5-10 के आयु के बच्छो को पठाने में इस्तमाल कर सकते है।

हर एक टिचिन्ग गाइड में वही बाइबल पद का अनुकरण किया है जो बाइबल टाइम पाठ में दिए गए है। बाइबल टाइम पाठ और गाइडलाइन्स साप्ताहिक आधार पर उपयोग करने केलिए बनाया गया है। आप्रैल के पाठ क्रिस्मस से सम्बन्धित है।

कई क्षेत्रों में A4 पाठ और दूसरे क्षेत्रों में A5 पुस्तिका को जिसमे 24 पाठ शामिल है असका उपयोग करते है। आम तौर पर शिक्षक A4 मासिक पाठ का वितरण करेंगे ओर एक हफ्तें में एक पाठ को विध्यालय, गिरिजाघर, या अपने घर ले जाकर पूरा करके वापस लौटाना चाहिए। हर महीने के अन्त में शिक्षक पाठ को इकट्ठा करके जाँचने के बाद जल्द ही लौटाना चाहिए।

आदर्शरूप में पुस्तिका इस्तमाल करते वक्त सत्र के अन्त में जाँच करने केलिए इकट्ठा करते है। हम समझ सकते है कि कई परिस्थितियों में यह असम्भव है। ऐसे स्थिति में पुस्तिका को कक्षा के दुसरे बच्चों में वितरण करके उन से जाँच करवाया जा सकता है। पुस्तिका के पीछे हर महीने का अन्क लिखने और बच्चों की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखने का स्थान दिए गए है। एक प्रमाण पत्र भी है जिसे अलग करके छः महीनों में प्राप्त किए कुल अन्क लिखकर बच्चों को देने है।

शिक्षक केलिए तैयारी

हम आदेशात्मक नही होने चाहते जिसकी वजह से शिक्षक को अपने विचारों और तरीको से सिखाने का अवसर न मिले। यह बाइबल टाइम सिखाने केलिए सिर्फ एक सूझाव है।

- **कहानी से सुपरिचित होना** - शिक्षकों को बाइबल कहानियों और उससे जुडे बाइबल टाइम पाठ से अच्छी तरह से सुपरिचित होना चाहिए। शिक्षक को पहले पाठ पूरा करना चाहिए। हर एक पाठ की दिशा-निर्देशों को ध्यान से पढकर नियोजन सहायता के रूप में भी इस्ततमाल करना चाहिए।

- **विषय को समझना** -हर एक पाठ के आरम्भ में अपने यह वाक्य देखा होगा - "हम सीख रहे हे कि" उसके बाद सीखने के दो उदेश्य भी दिए गए है जो हमे उम्मीद है कि शिक्षक के प्रस्तुति और बच्चे बाइलब टाइम को पूरा करने पर उन्हे समझ आऐंगे। सीखने का पहला उदेश्य है विषय के बारे में ज्ञान प्राप्त करना और दूसरा उदेश्य है बच्चे को इस ज्ञान के बारे में सोचने, प्रयोग करके अनुक्रिया देने केलिए प्रोत्साहन देना। यह निर्देशन पाठ में दिए गए मुख्य विषय सत्य का सूक्षम वक्तत्य है। इसे शिक्षक अपने पढाने और सीखने के अपने व्यक्तिगत मूल्यान्कन केलिए उपयोग कर सकते है।

- **परिचय कराना** - हर पाठ के आरम्भ में उन परिस्थितियों में बच्चों के अपने अनुभव के बारे में पूछकर शुरु करना चाहिए। बच्चों को पाठ का परिचय कराने केलिए कई तरीको का सुझाव दिए गए है। जिसके सहायता से कहानी की प्रारम्भ के बारे में बच्चे सम्वातात्मक चर्च कर सकेंगे।

- **पढाना**- कहानी की मुख्य सारांश हमने दिए है। हम यह नही चाहते की पढाते वक्त शिक्षक इसे देखे। हम चाहते है की शिक्षक इस पाठ से इतना परिचित हो ताकि मनेरन्जक और प्रेरणापद तरीके से बच्चों को वह सीखा पाऐंगे। शिक्षक यह चाहेंगे की बच्चे कहानी की मुख्य पाठ को समझे और उस कहानी को सीखने के बाद अनुक्रिया दे। कई प्रधान व्यख्यों को हम तिरछे अक्षरों में लिखे है।

- **सीखना** -हर एक कहानी में एक मुख्य पद दिए गए है। कई जगह दो पद दिए है। हम चाहते है की बच्चों को अक्सर मुख्य पद याद दिलाते रहे ताकि उन्हे बाइबल पदों के बारे में ज्ञान प्राप्त हो।

- **पूरा करे** - एक विध्यालय कि माहोल में बच्चो की सामर्थ्य और शिक्षक की तरह से दिए जाने वाले मदद के बारे में हमे पता होता है। कई बच्चों केलिए ज़रूरी है की शिक्षक उन्हे पाठ पढ के सुन्ाए। अन्य बच्चों स्वयं पढ सकते है। दोनों हाल में यह अच्छा होगा अगर बच्चों का ध्यान हम सवालों से सम्भन्धित निर्देशों के और खीच सके। अगर आप स्कूल से बाहर बाइबल टाइम सीखा रहे हो तो यह बहुत ज़रूरी है कि आप मदद केलिए मौजूद हो ताकि बच्चों को यह न लगे की यह एक बहुत ही मुश्किल काम या परीक्षा है। पढाते वक्त उसे मज़ेदार बनाना प्रोत्साहित करना और तारीफ करना अनिवार्य है।

- **याद करना**- पाठ को दोहराते वक्त पहेली या अभिनय द्वारा उसे मनोरंज़क बनाए ताकि बच्चों को वह हमेशा याद रहे।
- **प्रदर्शित करना**-हो सके तो चाक्षुष सहायक सामग्री का उपयोग करे ताकि बच्चों पाठ को अच्छी तरह से समझ सके। बेबसाइट में (www.freebibleimages.org & info@eikonbibleart.com) से यह सामग्री मिल सकते है।

1. मुख्य पद को सिखाना

पद को कागज़ या बोर्ड में लिखे और जैसे बच्चे उसे दोहरराते है पद से एक-एक पद करके निकाले ताकि अन्त में पूरा पद को निकाल दिया जाए और बच्चे उन्हे बिना देखे दोहराए।

2. मुख्य पद को परिचय कराने केलिए

A. बच्चों को दो झुण्ड में डालेः एक झुण्ड को कई अक्षर लिखे हुए परचियाँ दे और दुसरे झुण्ड को खाली परचे। बच्चे आपस में मिलकर उसे पूरा करे और सीखे।

B. सबसे पहले जो बच्चा बाइबल में यह पद ढूँढे वह जोर से उसे पढे।

समय योजना

क्रमः हर पाठ केलिए हम एक ही क्रम दिए है। लेकिन शिक्षक चाहे तो इच्छा अनुसार बदल सकते है।

1. प्रस्तुतीकरण और कहानी को सुनाना - लगभग 15 मिनट
2. मुख्य पद को पढाना - 5-10 मिनट
3. कार्य-पत्र को पूरा करना - 20 मिनट
4. सवाल-जवाब और दूसरे क्रियाकलाप - 5-10 मिनट

हमेशा यह कहावत याद रकनाः

"मुझे सुनाईए, मैं भूल सकता हूँ,
'मुझे दिखाईए, मैं याद रखूँगा,
मुझे शामिल करे, मैं सीख लूँगा।"

बाइबल टाइम पाठ्यक्रम

	लेवल 0 (प्री स्कूल) लेवल 1 (उम्र 5-7) लेवल 2 (उम्र 8-10)	लेवल 3 (उम्र 11-13)	लेवल 4 (उम्र 14+)
स्टार्टर सीरीज़	1. पहला पाठ - परिचय 2. U 1 लूका का सुसमाचार 3. U 2 लूका का सुसमाचार 4. U 3 लूका का सुसमाचार	1. पहला पाठ - परिचय 2. U 1 लूका का सुसमाचार 3. U 2 लूका का सुसमाचार 4. U 3 लूका का सुसमाचार	1. पहला पाठ - परिचय 2. U 1 लूका का सुसमाचार 3. U 2 लूका का सुसमाचार 4. U 3 लूका का सुसमाचार
सीरीज़ A	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. अब्राहम 6. अब्राहम 7. पतरस 8. पतरस 9. याकूब 10. प्रथम ईसाई 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. प्रार्थना 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी और पाप 2. उत्पत्ति 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. मसीही जीवन 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ B	1. मसीह का प्रारम्भीक जीवनकाल 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. दृष्टान्त 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. यीशु ने मिले लोग 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. सुसमाचार के लेखक 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. याकूब और परिवार 7. यूसुफ 8 प्रेरितों 2:42 आगे की और 9. मूसा 10. मूसा 11. व्यवस्था 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ C	1. दानियेल 2. और अलोकिक कर्म 3. यीशु ने मिले लोग 4. मसीह की मौत 5. रूत और शमुएल 6. दाऊद 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. योना 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु ने मिले लोग 3. और अलोकिक कर्म 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. परमेश्वर द्वारा उपयुक्त लोग (पुराना नियम) 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु की कहावत 3. प्रभु की शक्ति 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. पुराने नियम के और किरदार 12. क्रिसमस की कहानी

	A1 – लेवल 3 कहानी 1- आदि में विषय: परमेश्वर ने पृथ्वी की सृष्टि की।	A1 – लेवल 4 कहानी 1- सृष्टि विषय: आदि में।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 1: 1-19 ***मुख्य पद : उत्पत्ति 1:1*** **हम सीख रहे की :** • परमेश्वर ने संसार और उसमें सब कुछ बनाया। • परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया और व्यक्तिगत रूप से हमें पहचानता है और प्यार करता हैं।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 1: 1-31*** ***मुख्य पद : इब्रनियों 1:10; यशायाह 45:18*** **हम सीख रहे की :** • परमेश्वर ने इस ब्रह्मांड को बनाया। • परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं। • परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया।
पहचान कराने	छात्रों से इन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए कहें। इसके बाद छात्र अपने एक साथी के साथ अपना जवाब सांझा सकते हैं। 1. ब्रह्मांड में कितने तारे हैं? 2. दुनिया में कितने लोग हैं? कुछ मिनटों के बाद निंनलिखित जवाब प्रकाशित करें: • यूरोपियन अंतरिक्ष एजेंसी के अनुसार तारों का सहीं संख्या कहना असंभव हैं। अनुमान किया गया है की अकेले हमारी आकाशगंगा में ही 100 हज़ार मिलियन तारें हैं। लाखों अन्य आकाशगंगाओं और भी हैं। जिनमें असंक्ख्य और तारें है। • दुनिया में 7 बिलियन लोग हैं।	छात्रों से इन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए कहें। इसके बाद छात्र अपने एक साथी के साथ अपना जवाब सांझा सकते हैं। 1. ब्रह्मांड में कितने तारे हैं? 2. दुनिया में कितने लोग हैं?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. सब कुछ अस्तित्व होने से पहले भगवान वहां मौजूद थे। 2. परमेश्वर ने छः दिनों में संसार का सृष्टि की। 3. पहला दिन परमेश्वर ने उजियाला बनाया और उन्होंने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया। दूसरे दिन परमेश्वर ने आकाश बनाया और इसे नीचे जल से अलग किया। तीसरे दिन परमेश्वर ने जल को एक स्थान में इकट्ठा किया और सूखी भूमि को पृथ्वी बुलाया। चौथे दिन भगवान ने आकाश में ज्योतियाँ रखीः सूर्य, चंद्रमा और सितारें। पांचवें दिन परमेश्वर ने जल-जंतुओं और पक्षियों को बनाया। छठे दिन परमेश्वर ने जानवरों को बनाया। 4. फिर परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया। पृथ्वी को भरने और पृथ्वी और उसके प्राणियों पर शासन करने नर और नारी के रूप में उसने मनुष्यों की सृष्टि की। 5. परमेश्वर ने मनुष्य और उसके सभी प्राणियों के लिए भोजन प्रदान किया। 6. परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया उसे देखा और सोचा की सब कुछ अच्छा हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें।** 1. परमेश्वर ने छः दिनों में संसार का सृष्टि की। 2. पहला दिन परमेश्वर ने उजियाला बनाया और उन्होंने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया। दूसरे दिन परमेश्वर ने आकाश बनाया और इसे नीचे जल से अलग किया। तीसरे दिन परमेश्वर ने जल को एक स्थान में इकट्ठा किया और सूखी भूमि को पृथ्वी बुलाया। चौथे दिन भगवान ने आकाश में ज्योतियाँ रखीः सूर्य, चंद्रमा और सितारें। पांचवें दिन परमेश्वर ने जल-जंतुओं और पक्षियों को बनाया। छठे दिन परमेश्वर ने जानवरों को बनाया। 3. परमेश्वर की शक्ति अद्भुत हैः उसने अपने वचन से केवल छह दिन में इस दुनिया को बनाया। 4. परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में, नर और नारी के रूप में बनाया। 5. जब परमेश्वर ने अपने सृष्टि को देखा थो उनका फैसला था कि सब कुछ बहुत अच्छा था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	4/5 के समूह में बच्चों को अलग करें। और परमेश्वर के छः दिनों की सृष्टि को प्रस्तुत करते पोस्टर्स बनाएं।	इस पाठ में आपने परमेश्वर के व्यक्तित्व के बारे में क्या सीखा है? इस को प्रतिबिंबित करने के लिए एक संक्षिप्त शब्द कविता, अनुच्छेद परिवर्णी या काव्य लिखें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं और वे सब कुछ का सृष्टिकर्ता हैं। भले ही उनकी सृष्टि बहुत ही विस्तृत है, वह हम में से हर एक को जानता है और प्यार करता है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. परमेश्वर ने हमारी दुनिया बनाई और उसने हमें भी बनाया। यह हक़ीक़त हमारे जीवन में क्या अन्तर लाना चाहिए? 2. **उत्पत्ति 1:26,27 ः यशायाह 45:18** पढ़े। मनुष्य के लिए परमेश्वर का दर्शन क्या था? यह आज हमारी जीवन शैली को कैसे प्रभावित करता है?

	A1 – लेवल 3 कहानी 2 - आदि में विषय: परमेश्वर मनुष्य का सृष्टि करता हैं।	A1 – लेवल 4 कहानी 2 - सृष्टि विषय: सम्पूरित।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 1: 20 - 31 ***मुख्य पद : उत्पत्ति 1:27*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने जानवरों को बनाया लेकिन उसने मनुष्य को सबसे ख़ास बनाया। 2. परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया, ताकि मनुष्य परमेश्वर की तरह बने और उसके सृष्टि पर शासन करे। 3. परमेश्वर ने उसके साथ और अन्य मानव के साथ आपसी संबंध के लिए लोगों का सृष्टि किया। 4. परमेश्वर ने मनुष्य को जिम्मेदारी दी।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 1: 27-31, 2: 1-9*** ***मुख्य पद : यूहन्ना 1:1-3*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर सातवें दिन विश्राम किया। 2. परमेश्वर विश्राम के लिए सब्त का दिन बनाया। 3. परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन दिया। 4. मानव जीवन अद्वितीय मूल्य का है।
पहचान कराने	4 के समूह में कक्षा को विभाजित करें। हरएक समूह को कागज का एक टुकड़ा और एक मार्कर कलम दें। समूह से एक व्यक्ति को एक जानवर का चित्र खींचना होगा और बाकी समूह को अन्दाज़ा लगाना हैं की वह कौन सा जानवर हैं।	निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ें और प्रत्येक वाक्य के बारे में अपनी राय देने के लिए छात्रों से कहें। 1. रविवार एक विशेष दिन होने का विचार आज अप्रासंगिक है। 2. होमवर्क और खरीदारी करने के लिए रविवार एक शानदार समय है। 3. रविवार को खेल कूद मना किया जाना चाहिए। 4. मानव भ्रूण पर चिकित्सा अनुसंधान स्वीकार्य है। 5. ईसाइयों को युद्धों में शामिल नहीं होना चाहिए।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने फलदायी होने और पृथ्वी में भरने के लिए जानवरों को बनाया। 2. परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाया। ताकि वे पशु-पक्षी और मछिलयों पर अधिकार रखें। 3. परमेश्वर ने नर और नारी के रूप में मनुष्य को बनाया। 4. परमेश्वर मनुष्य को आशीर्वाद दिया और उन्हें विशेष कार्य और जिम्मेदारियां दीं (उन्हें फलदायी होने, पृथ्वी में भरने और परमेश्वर की सृष्टि पर अधिकार रखना था) 5. हमारे जीवन के लिए भोजन का स्रोत प्रदान किया। 6. परमेश्वर अपने सृष्टि से बहुत खुश था। और उसने देखा और कहा कि वह अच्छा हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. आदि में जब सब कुछ बेडौल और सुनसान पड़ा था तब भी परमेश्वर वहाँ था। वचन (प्रभु यीशु) परमेश्वर था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। परमेश्वर सृष्टिकर्ता हैं। 2. परमेश्वर आदम को अदन की वाटिका में रखा। 3. परमेश्वर अदन वाटिका में दो विशेष पेड़ लगाए: जीवन के वृक्ष और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष। 4. परमेश्वर सातवें दिन विश्राम किया और मनुष्य को विश्राम करने के लिए एक विशेष दिन का प्रावधान बनाया। 5. परमेश्वर ने मनुष्य के नथनों में जीवन का श्वास फूका। इस तरह मनुष्य जानवरों से अलग बना। मानव जीवन अनमोल और अद्वितीय मूल्य का हैं। छोटे समूहों में चर्चा करें फिर पूरे समूह को प्रतिक्रिया दें: **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	छोटे समूहों में चर्चा करें फिर पूरे समूह को प्रतिक्रिया दें: परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाया। ताकि वे पश-पक्षी और मछिलयों पर अधिकार रखें। हम उन्से कैसे बर्ताव करते हैं? परमेश्वर ने उसके साथ और अन्य मानव के साथ आपसी संबंध के लिए मनुष्य का सृष्टि किया। हम किस तरह से परमेश्वर और अन्य लोगों के लिए अपना प्यार दिखा सकते हैं। घर पर? विद्यालय में? गिरिजाघर में?	**निर्गमन 20:8 और मरकुस 2:27** पढ़े। आज हमारे लिए इन पदों की प्रासंगिकता क्या है? हमने सीखा है कि मनुष्य अद्वितीय मूल्य का है। विज्ञान, चिकित्सा, कानून और बुजुर्गों की देखभाल जैसे मुद्दों को यह हकिकत कैसे प्रभावित कर सकता है?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. परमेश्वर ने उसके साथ और अन्य मानव के साथ आपसी संबंध के लिए मनुष्य का सृष्टि किया। अगर हम हर दिन पश्चाताप करके परमेश्वर पर भरोसा करते हैं थो यह हमारे जीवन में क्या अन्तर ला सकता हैं? 2. प्रार्थना करें कि भगवान हमारी जिम्मेदारियों को पूरा करने और परमेश्वर के विशेषताओं (उदाहरण: प्रेम, दया और न्याय) को हमारे परिवारों, स्कूलों और चर्च समूह में इस सप्ताह दिखाना में हमारी मदद करें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. आज हम अपने जीवन में सब्त का विश्राम कैसे करते हैं? क्या सब्त का विश्राम आवश्यक है? क्यों ? 2. हम कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारे जीवन हमारे विश्वास को दर्शाते हैं कि मानव जीवन भगवान द्वारा दिया गया है और अद्वितीय मूल्य का है।

	A1 – लेवल 3 कहानी 3 - आदि में विषय: हालात बिगड़ गए।	A1 – लेवल 4 कहानी 3 - आदि में विषय: हालात बिगड़ गए।
	बाइबल फोकस: ***उत्पत्ति 2: 15-17; 3:1-13*** ***मुख्य पद :*** ***उत्पत्ति 3:3*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। 2. आदम और हव्वा लज्जित हो गए और उनके पाप के परिणाम का सामना करना पड़ा।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 1: 14 -19; उत्पत्ति 3: 1 -7*** ***मुख्य पद : रोमियों 3 :23 ; रोमियों 6:23*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन के वृक्ष और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल खाने के लिए मना किया। 2. सर्प ने हव्वा को धोखा दिया और आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। 3. आदम और हव्वा शर्मिंदा थ
पहचान कराने	छात्रों से पूछें कि क्या उनके स्कूल में नियम हैं। ये आवश्यक क्यों हैं? अगर लोगों ने उन्हें नजरअंदाज कर दिया तो क्या होगा?	विद्यार्थियों को निम्नलिखित वक्तव्य को जोड़े में चर्चा करने के लिए कहें: स्कूल / काम / घर पर विद्यार्थियों की ज़िम्मेदारी। नियमों या दिशानिर्देशों जिसका पालन उन्हें करना हैं। अगर इन नियमों को नजरअंदाज या आज्ञा उल्लंघन कर दिया गया तो क्या होगा?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने आदमी को अदन की वाटिका में रखा और उसमें काम करने और उसकी रक्षा करने का काम दिया। परमेश्वर ने मनुष्य को वह सारे चीजें प्रदान किया जिसकी उन्हें जरूरत थी। लेकिन एक नियम था जो मनुष्य को पालन करना था। उसे जीवन के वृक्ष और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल खाने की अनुमति नहीं थी। परमेश्वर ने कहा कि अगर वह उसने खाया थो वह निश्चित रूप से मर जाएगा। 2. मनुष्य को जानवरों और पक्षियों के नाम देने का काम दिया गया। 3. आदमी को अपनी ज़िम्मेदारियों पूरा करने में मदद करने के लिए परमेश्वर ने एक स्त्री को बनाया। विवाह में, एक पुरुष और एक स्त्री एक नया परिवार बनाते हैं और एक झुण्ड के रूप में एक साथ काम करते हैं। 4. धूर्त सर्प, भेस बदले हुए परमेश्वर का विरोधी ने भगवान के आदेश पर संदेह डाली। सर्प ने आदम और हव्वा से कहा कि परमेश्वर के शासन का उल्लंघन करने पर वे मर नहीं जाएंगे। सर्प ने स्त्री को धोखा दिया और जो फल खाने के लिए परमेश्वर ने उन्हें मन किया था वोह फल स्त्री ने खाया और अपने पति को भी दिया और उसने भी खा लिया। 5. जब पुरुष और स्त्री ने ऐसा किया, वे दुखी हुए। उन्होंने अपने आप छिपाने के लिए अंजीर के पत्ते जोड़ कर कपडा बनाया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पुकारा और उन्होंने सब कुछ बताया जो उन्होंने किया था। आदम ने हव्वा को दोषी ठहराया और हव्वा नेसर्प को दोषी ठहराया। 6. परमेश्वर ने सर्प को श्राप दिया। आदम और हव्वा को अपने पापों के परिणामों का सामना करना पड़ा। उन्हें बहुत दर्द का अनुभव हुआ और अत्यंत संघर्ष करना पड़ा। जीवन कठिन था, और एक दिन उन्हें मरना भी होगा। 7. परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए जानवरों की खाल से कपड़े बनाये और उन्हें अदन की वाटिका से बाहर, जीवन के वृक्ष से दूर भेज दिया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें। पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने आदम को वाटिका की देखभाल करने और पक्षियों और जानवरों के नामकरण की ज़िम्मेदारी दी। 2. परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य भले या बुरे के ज्ञान का वृक्ष को छोड़कर किसी भी पेड़ का फल खा सकता है। भगवान ने कहा कि इस पेड़ से खाने का नतीजा निश्चित मौत है। 3. परमेश्वर ने आदम को स्त्री की रूप में एक सहायक बनाया। उन्हें मिलकर काम काम करना था। एक शादी में पुरुष और स्त्री मिलकर एक नया परिवार बनाते हैं। और एक टीम के रूप में एक साथ काम करते हैं। 4. धूर्त सर्प ने हव्वा को धोखा दिया, उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंगन किया। निषिद्ध फल खा लिया और आदमी को भी खाने के लिए दिया। मनुष्य ने फल खाकर परमेश्वर की अवज्ञा भी की थी। आदम और हव्वा ने फल खाकर पाप किया। 5. वे जानते थे कि उन्होंने परमेश्वर की आदेश का उल्लंगन किया हैं और शर्मिन्दा थे। उन्हें अपने इस फैसले के परिणामों का सामना करना था। 6. उन्हें परमेश्वर की सजा का सामना करना पडा। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	इस पाठ को **रोमियों 5:12** से जोड़िए। आदम और हव्वा की आज्ञालंघन के कारण हम सब पापी पैदा हुए। हमारे जीवन में परमेश्वर के आदेशों के लिए अवज्ञा के उदाहरणों के बारे में विचार करने के लिए छात्रों से कहें। यह आज्ञालंघन हमारे और दूसरों के जीवन को कैसे प्रभावित करेंगें।	आदम और हव्वा के आज्ञालंघन का परिणाम क्या था? **रोमियों 5: 12 -14 और 18, 19** पढ़े। आदम की आज्ञाकारिता ने आज हमें कैसे प्रभावित किया है?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** हमें परमेश्वर से क्षमा मांगनें की ज़रूरत है ताकि वह हमें माफ़ कर सकें और हमें नया मनुष्य बनाएं। तब हमारे जीवन परमेश्वर को आनन्द देंगें और उसके आदेशों का पालन हम कर पायेंगें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. एक ईसाई होने के नाते परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना अहम क्यों हैं? 2. परमेश्वर की आज्ञा का पालन प्रायौगिक तरीकों से हमारे जीवन में आज हम कैसे कर सकते हैं?

	A1 – लेवल 3 कहानी 4 - सृष्टि विषय: परमेश्वर के इच्छानुसार कार्य करना।	A1 – लेवल 4 कहानी 4 - सृष्टि विषय: पाप के परिणाम।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 4 : 1-16 ***मुख्य पद : यूहन्ना 14: 6*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हाबिल ने परमेश्वर के मार्ग का पालन किया लेकिन कैन ने अपने तरीके का पीछा किया। परमेश्वर ने हाबिल के भेंट को स्वीकार किया। लेकिन कैन का अस्वीकृत कर दिया। 2. कैन ने हाबिल की हत्या कर दी। परमेश्वर ने उसे देश से निर्वासित किया और उसे एक भगोड़ा बना दिया। कैन परमेश्वर के सम्मुख से निकल गया। 3. परमेश्वर तक पहुँचने का एक ही मार्ग हैं और वह मार्ग परमेश्वर का मार्ग हैं।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 3: 7 -24*** ***मुख्य पद : 1 कुरिंन्थियों 15: 22; रोमियों 6:23*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. आदम और हव्वा ने परमेश्वर से छिपने की कोशिश की। 2. परमेश्वर ने धूर्त सर्प को शाप दिया। 3. परमेश्वर ने कहा कि आदम और हव्वा को उनके पाप के परिणामस्वरूप आगे दर्द और कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। 4. परमेश्वर ने आदम और हव्वा की नग्न को छिपाने के लिए कपड़े दिए। 5. परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वाटिका से निर्वासित कर किया।
पहचान कराने	अगर आप किसी यात्रा पर निकलते हैं और आप कोई नक्शे पर या निर्देशों को न देखे तो क्या होगा? क्या आपने कभी दिशानिर्देशों को नजरअंदाज करके अपना रास्ता खो दिया हैं? कैन ने परमेश्वर के निर्देशों पर ध्यान नहीं दिया और एक भगोड़ा बन गया।	छात्रों को एक घटना के बारे में सोचने के लिए कहें, जब वे घर या स्कूल में अवज्ञाकारी थे। इससे उस पर क्या असर हुआ था?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. आदम और हव्वा को दो बेटे थे। हाबिल एक चरवाहा और कैन एक किसान था। 2. परमेश्वर ने हाबिल की भेंट को ग्रहण किया: अपनी भेड़ बकरियों के एक पहिलौठे बच्चे की भेंट। लेकिन कैन का भेंट को परमेश्वर ने ग्रहण नहीं किया: भूमि के उपज में से कुछ। कैन क्रोधित और उदास हो गया। 3 . परमेश्वर ने पाप के बारे में कैन को चेतावनी दी और उनके आदेशों का पालन करने का महत्व समझाया। कैन ने खेद नहीं किया और उसने परमेश्वर की बात भी नहीं माना। 4. कैन ने अपना भाई हाबिल की हत्या किया। परमेश्वर ने उसे देश से निर्वासित किया। कैन परमेश्वर के सम्मुख से दूर एक भगोड़ा बन गया। 5. हाबिल समझ गया कि उसे परमेश्वर के लिए मेमने की भेंट करना था। लेकिन कैन परमेश्वर के नियमों के अनुसार नहीं आया और उसे दंडित किया गया। 6. हाबिल का भेंट क्रूस पर प्रभु यीशु देने वाला बलिदान का इलहाम था।	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. आदम और हव्वा की अवज्ञा के कारण अच्छे और बुरे के बारे में एक नई जागरूकता हुई और उन्हें उनकी नग्नता के बारे में जानकारी हुए। वे भयभीत थे और भगवान से छिपना चाहते थे। 2. परमेश्वर ने आदम और हव्वा से सवाल पूछा। वह चाहता था कि वे खुद अपने गलतियों का क़बूल करें। लेकिन वे दोनों ने किसी और को ही दोषी ठहरा रहे थे । आदम ने हव्वा को दोषी ठहराया और हव्वा ने सर्प को दोषी ठहराया। 3. आदम और हव्वा को अपने अवज्ञा के परिणामों का सामना करना पड़ा। उन्हें दर्द और कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। और वाटिका में परमेश्वर की समीपता से भी निर्वासित होना पड़ा। 4. हम भी उनके पाप के परिणामों का सामना आज भी कर रहे हैं - क्योंकि आदम ने पाप किया हमें उससे तादात्म्य किया जाता हैं और हम सभी को एक दिन मरना होगा। 5. परमेश्वर कृपा भरा प्रावधान का प्रभु हैं, उसने आदम और हव्वा को अपने नग्नता को छिपाने केलिए चमड़े की कपड़े बनाकर दिए। रोमियों 6: 23 हमें सिखाता है कि प्रभु यीशु क्रिस्त को अगर हम हमारे उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करे तो परमेश्वर हमें अनन्त जीवन मुफ़्त उपहार में देंगे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	मुख्य पद में यीशु ने कहा की पिता परमेश्वर के पास पहुँचने का मार्ग वो ही हैं। परमेश्वर को प्रसन्न करने केलिए लोग किस तरह के दुसरे रास्ते अपनाते हैं ? मुख्य पद को एक कार्ड में लिखकर एक बुक मार्क या पोस्ट कार्ड बनाए।	इस पाठ हम परमेश्वर के व्यक्तित्व के बारे में क्या सीखा है? इस पाठ को **रोमियों 5:12** से जोड़िए। आदम और हव्वा की आज्ञालंघन के कारण हम सब पापी पैदा हुए। हमारे जीवन में परमेश्वर के आदेशों के लिए अवज्ञा के उदाहरणों के बारे में विचार करने के लिए छात्रों से कहें। यह आज्ञालंघन हमारे और दूसरों के जीवन को कैसे प्रभावित करेंगें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. मुख्य पद को याद करें। 2. क्या आप यीशु की अनुकरण कर रहे हो जो परमेश्वर तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग हैं ?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. भगवान से उसकी आज्ञा मानने के लिए शक्ति मांगें और उन्हें धन्यवाद दें क्योंकि जब भी हम उनके आदेश न मानकर उन्हें निराश करते हैं तब भी उनके कृपा से वे हमारे लिए प्रावधान करते हैं। 2. हमें परमेश्वर से क्षमा मांगनें की ज़रूरत है ताकि वह हमें माफ़ कर सकें और हमें नया मनुष्य बनाएं। तब हमारे जीवन परमेश्वर को आनन्द देंगें और उसके आदेशों का पालन हम कर पायेंगें।

	A2 – लेवल 3 कहानी 1 - नूह और जलप्रलय विषय: जहाज का निर्माण।	A2 – लेवल 4 कहानी 1 - कैन और हाबिल विषय: परमेश्वर की आराधना।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 6: 5 - 22 ***मुख्य पद : उत्पत्ति 6: 8*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर पवित्र है लोगों की पाप उसके दिल को दुखी हैं। 2. परमेश्वर नूह को बचाने का फैसला किया। परमेश्वर ने नूह से एक बड़ी जहाज बनाने के लिए आदेश दिया ताकि नूह, उसका परिवार और हरेक जानवर और पक्षी जाति में से दो बच सके। 3. नूह ने वही किया जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए कहा। नूह को ईश्वर पर विश्वास था और उसने उसके आदेश का पालन किया।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 4: 1 - 16*** ***मुख्य पद : इब्रनियों 11: 4*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हाबिल परमेश्वर के इच्छनुसार उनके पास गया परमेश्वर ने हाबिल की भेंट को ग्रहण किया। 2. कैन अपनी इच्छनुसार गया। परमेश्वर ने कैन की भेंट को अस्वीकार किया
पहचान कराने	बच्चों को एक मॉडल विमान या एक केक पकाने के निर्देशों का एक सूचीपत्र दिखाएं। कुछ बनाते वक्त निर्देशों का पालन करने का अहमियत बच्चों को समझाएं। समझाओ कि परमेश्वर ने बहुत विस्तृत निर्देश दिए और नूह ने परमेश्वर के निर्देशों को ठीक उसी तरह पालन किया।	विभिन्न परिस्थितियों की एक सूची बनाओ जिसमें हमें निर्देशों का पालन करने की आवश्यकता है। क्या होगा जब हम इन निर्देशों को अनदेखा करेंगे?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पृथ्वी के लोग बहुत दुष्कर्मी और निंद्य हो गए। उनके अवज्ञा और दुराचरण के कारण परमेश्वर बहुत दुखी हुए। 2. परमेश्वर ने सारे मनुष्य और जानवरों को पृथ्वी से मिटाने का फैसला किया जिसका सृस्टि उसने किय था। 3. नूह सबसे अलग था। परमेश्वर उससे प्रसन्न था। वह दूसरे लोगों से भिन्न था क्योंकि उसने सही कार्य किया और वह परमेश्वर से प्यार करता था और उसकी आज्ञा मानता था। 4. भगवान ने नूह चेतावनी दी कि वह एक जलप्रलय से सभी लोगों और जीवित प्राणियों को नष्ट करने वाला था क्योंकि उन्होंने पृथ्वी को बुराई से भर दिया था। 5. परमेश्वर ने नूह से तैयारी करने के लिए विशेष निर्देश दिया। उसने नूह से जहाज बनाने केलिए विस्तृत निर्देश दिए ताकि नूह, उसका परिवार और हरेक जानवर और पक्षी जाति में से दो बच सके। 6. नूह को परमेश्वर पर विश्वास था और उसने परमेश्वर के निर्देशों का पालन ठीक उसी तरह से किया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. आदम और हव्वा को दो बेटे थे। हाबिल एक चरवाहा और कैन एक किसान था। 2. परमेश्वर ने हाबिल की भेंट को ग्रहण किया: अपनी भेड़ बकरियों के एक पहिलौठे बच्चे की भेंट। लेकिन कैन का भेंट को परमेश्वर ने ग्रहण नहीं किया: भूमि के उपज में से कुछ। कैन क्रोधित और उदास हो गया। 3. परमेश्वर ने पाप के बारे में कैन को चेतावनी दी और उनके आदेशों का पालन करने का महत्व समझाया। कैन ने खेद नहीं किया और उसने परमेश्वर की बात भी नहीं माना। 4. कैन ने अपना भाई हाबिल की हत्या किया। परमेश्वर ने उसे देश से निर्वासित किया। कैन परमेश्वर के सम्मुख से दूर एक भगोड़ा बन गया। 5. हाबिल समझ गया कि उसे परमेश्वर के लिए मेमने की भेंट करना था। लेकिन कैन परमेश्वर के नियमों के अनुसार नहीं आया और उसे दंडित किया गया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	नूह, उसके परिवार और परमेश्वर के निर्देशों के बारे में जो कुछ भी सीखा हैं उसके आधार पर एक प्रश्नोत्तरी के साथ इस कहानी की समीक्षा करें।	नूह, उसके परिवार और परमेश्वर के निर्देशों के बारे में जो कुछ भी सीखा हैं उसके आधार पर एक प्रश्नोत्तरी के साथ इस कहानी की समीक्षा करें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** नूह ने परमेश्वर पर विश्वास करके उनके आदेशों का ठीक उसी तरह पालन किया। हम परमेश्वर पर भरोसा कैसे कर सकते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. कैन और हाबिल के जीवन और नज़रियों से हमें क्या सीख मिलते हैं ? 2. हमारे जीवन में इस अध्याय के सीख को हम कैसे व्यवहार में ला सकते हैं ?

	A2 – लेवल 3 कहानी 2 - नूह और जलप्रलय विषय: जहाज के अन्दर।	A2 – लेवल 4 कहानी 2 - हनोक और नूह विषय: जहाज के अन्दर।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 7: 1-20 ***मुख्य पद : उत्पत्ति 7:5*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर नूह और उसके परिवार को बचाने का एक मार्ग का प्रबन्ध किया। 2. नूह को परमेश्वर पर विश्वास था और उसने वही किया जो परमेश्वर ने उससे करने को कहा था।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 5: 21 - 33; 6: 1 - 15*** ***मुख्य पद : उत्पत्ति इब्रानियों 11: 5*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हनोक और उनके पड़पोता नूह परमेश्वर के साथ करीबी संगति में चलते थे। 2. परमेश्वर के साथ उनके संगति की वजह से ये दो पुरुष अन्य लोगों से अलग थे।
पहचान कराने	क्या आप कभी अपने परिवार के साथ एक सफर पर गए हो ? आपने इसके लिए क्या तैयारियां की?	परमेश्वर के साथ संबंध होने से हमें भीड़ में अलग दिखना चाहिए। मसीहियों को अन्य लोगों से अलग कैसे होना चाहिए ? इसका एक सूची बनाए।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर नूह को चेतावनी दी कि 7 दिनों के बाद वह एक जलप्रलय भेजेंगे। 2. परमेश्वर नूह से जहाज के अन्दर जानवरों को ले जाने के लिए कहा ताकि वे जलप्रलय से बच सकें। 3. उस दिन दूसरे महीने के 17 वें दिन नूह 600 साल का था। जैसा कि भगवान ने उसे निर्देश दिया था नूह ने अपने परिवार और जानवरों को जहाज में ले आया। जैसे भगवान ने कहा था 7 दिन बाद बाढ़ आ गई। 4. जब नूह और उसके परिवार जहाज में चढ़े परमेश्वर उन्हें नाव के अंदर सुरक्षित रखते हुए द्वार को बंद कर दिए। केवल नाव के अंदर बंद नूह और उसके परिवार भयानक बाढ़ से बचा। बारिश 40 दिनों तक चली। सबसे ऊँचे पर्वत से भी 22 फीट ऊपर पानी चढ़ गया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. हनोक 365 साल तक जीवित रहा और परमेश्वर के साथ करीबी संगति में चलते रहे। 2. बाइबल कहती है कि हनोक का मौत अन्य लोगों की तरह नहीं हुआ। अपने जीवन के अंत में वह तिरोहित हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे स्वर्ग में उठा लिया। 3. हनोक की तरह नूह भी भगवान के साथ करीबी संगति में चलते थे। उसके आस-पास के दुष्ट लोगों से भिन्न वह एक धार्मिक व्यक्ति था। 4. नूह के दिन के लोगों की पापपूर्णता ने परमेश्वर के दिल को ठेस पहुँचाया। उन्होंने उन्हें जलप्रलय से सज़ा देने का फैसला किया लेकिन उसने नूह को बचाया। 5. परमेश्वर ने नूह उसे और उसके परिवार को बाढ़ से बचाने के लिए जहाज बनाने के निर्देश दिया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	रचनात्मक बनो ! पानी में तैरते हुए जहाज के अन्दर नूह, उनका परिवार और जानवरों का चित्र बनाइए। अपनी चित्र को 'परमेश्वर द्वारा सुरक्षित ' का शीर्षक दे।	हनोक और नूह किस प्रकार के लोग थे? उसे अन्य लोगों से अलग क्या करते थे ?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** परमेश्वर नूह को प्यार करता था इसलिए उसे बाढ़ से बचाने के लिए एक मार्ग का प्रावधान किया। नूह को पहले परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना था। परमेश्वर हमें न्याय के लिए तैयार रहने के लिए कहता है। परमेश्वर चाहता है कि हम उस प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा करें जिन्होंने हमारे उद्धार के लिए क्रूस पर अपना प्राण दिया था। क्या आपने उस पर भरोसा किया है? क्या आप उद्धार पाने के लिए तैयार हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** उन अभिलक्षणों का सूची बनाइए जो मसीही को अन्य लोगों से ख़ास बनाते हैं। हनोक और नूह के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के बारे में विचार करिए। परमेश्वर पर भरोसा करने केलिए उनसे मदद मांगिए और इस हफ़्ता उनके राह पर चलिए। आप किसी एक सच्चा मसीही का एक खास विशेषण चुनिए और इस क्षेत्र में आपको बढ़ने में परमेश्वर से मदद मांगिए।

	A2 – लेवल 3 कहानी 3 - नूह और जलप्रलय विषय: जहाज द्वारा सुरक्षित।	A2 – लेवल 4 कहानी 3 - नूह और जलप्रलय विषय: परमेश्वर केलिए काम करना।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 8: 1-22 ***मुख्य पद : उत्पत्ति 8: 1*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर जहाज के अन्दर बन्द नूह उनके परिवार और सारे जानवरों को याद किया और देखभाल भी किया। 2. नूह परमेश्वर का आभारी था क्योंकि उसने उसे जहाज में सुरक्षित रखा था। 3. परमेश्वर ने वादा किया की सभी जीवित चीजों का नाश एक साथ फिर कभी भी नहीं होगा ।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 6: 14-22; 7: 1-24*** ***मुख्य पद : इब्रनियों 11: 7*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने जहाज के निर्माण के बारे में नूह को विस्तृत निर्देश दिए। 2. नूह ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया और वह सुरक्षित रहा।
पहचान कराने	1. आपके माता-पिता, मित्रों या शिक्षकों आपकी देखभाल कैसे करते हैं? उन सभी तरीकों की एक सूची बनाएं। 2. प्रतिदिन परमेश्वर हमारे देखभाल कैसे करते हैं? उन तरीकों की एक सूची बनाएं। 3. जो कुछ भी हमारे परिवार, मित्र और शिक्षक हमारे लिए करते हैं, उनके लिए उन्हें धन्यवाद देने के महत्त्व के बारे में बच्चों को समझाएं। और भी आवश्यक हैं उस परमेश्वर की शुक्रिया करने जो उन सभी को बचाता है जो उस पर भरोसा करते हैं।	विमानों और जहाजों पर दिए गए सुरक्षा निर्देशों को ग्रुप के साथ चर्चा करें। क्या लोग उन्हें गंभीरता से लेते हैं? क्यों? यह इतना महत्वपूर्ण क्यों हैं कि नूह ने परमेश्वर की हर एक आदेश का पालन किया था?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने नूह, उनके परिवार और जहाज के अंदर बंद सभी जानवरों को याद किया। उन्होनें पृथ्वी पर पवन बहाई और जल घटने लगा। 2. 150 दिनों (कुल 5 महीने) के बाद जहाज अरारात नामक पहाड़ पर टिक गया। उसके बाद साढ़े दो महिनों तक पानी घट ता गया और दूसरे पहाड़ों की चोटियाँ दिखाई दी। 3. 40 दिन के बाद नूह ने जहाज के खिड़की खोलकर इक कौआ को उड़ाया जो वापिस नहीं आया। फिर उसने एक कबूतरी को उड़ाया, सूखी जगह न मिलने पर वह जहाज में वापिस लौट आई। सात दिन बाद उसने उसी कबूतरी को जहाज से फिर उड़ा दिया। इस बार वह चोंच में जैतून का एक नया पत्ता लिए उसके पास आई। नूह जान लिया की जल पृथ्वी से घट गया हैं। फिर 7 दिनों के बाद जब उसने कबूतरी को उड़ाया वह फिर कभी लौट कर नहीं आई। 4. आखिरकार, जल प्रलय के साढ़े बारह महीनों के बाद, पृथ्वी फिर से सूख गई। 5. परमेश्वर ने नूह से अपने परिवार समेत जहाज से निकलने को कहा। 6. नूह बहुत आभारी था। उसने एक वेदी बनाई और परमेश्वर के लिए होमबलि चढ़ाई। 7. परमेश्वर नूह के बलि से प्रसन्न थे और उन्होंने वादा किया कि फिर कभी भी वह सभी जीवित चीजों को नाश नहीं करेंगें। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने नूह को एक बड़ी जहाज की निर्माण के बारे में और उस जलप्रलय के लिए तैयारी करने के बारे में विस्तृत निर्देश दिए। 2. परमेश्वर ने जलप्रलय के बारे में विस्तृत से नूह को चेतावनी दी थी। 3. परमेश्वर नूह, उनके परिवार और जानवरों को बचाने का वादा किया। 4. परमेश्वर ने जानवरों को बचाने के बारे में विस्तृत निर्देश दिए। नूह, उसका परिवार और जानवर नाव के अन्दर चले गए। और परमेश्वर उन्हें अंदर बंद कर दिया। 5. बाढ़ 40 दिनों तक चली। भारी बारिश में सन्दूक के बाहर रहने वाले सभी जीवित प्राणी तबाह हो गया। केवल नूह और उनके परिवार ने जानवरों के साथ सन्दूक के अंदर जीवित रहे। बाढ़ के पानी के ऊपर तैरते हुए भगवान ने उन्हें सब सुरक्षित रखा। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	एक पोस्टर बनाएं और उन चीजों को शामिल करें जिनके लिए हमें परमेश्वर का शुक्रिया अदा करना चाहिए, विशेष रूप से उद्धार के लिए।	हम इस कहानी में परमेश्वर और नूह के ख़ासियत की बारे में क्या सीखते हैं? उन शब्दों की एक सूची बनाएं जिस से आप इन खासियतों की वर्णन करेंगे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** परमेश्वर नूह को बचाया और उसने उसकी देखभाल किया। नूह परमेश्वर के लिए आभारी था। परमेश्वर हमें बचाने और हमारी देखभाल करने के लिए सक्षम और तैयार है। हमें उस पर भरोसा करना चाहिए और उसे धन्यवाद देना चाहिए।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. मुख्य पद को पढ़िए। नूह के आदर्शों का पालन हम अपने जीवन में कैसे कर सकते हैं। 2. हमारे आसपास के लोगों पर इसका क्या असर हो सकता है?

	A2 – लेवल 3 कहानी 4 - नूह और जलप्रलय विषय: जहाज से बाहर।	A2 – लेवल 4 कहानी 4 - नूह और उनके परिवार विषय: परमेश्वर की आराधना।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 9: 7-17 ***मुख्य पद : उत्पत्ति 9:15*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने नूह से एक वाचा वचन किया। उसने वादा किया कि पृथ्वी के सारे जीवित प्राणियों का विनाश फिर कभी वह बाढ़ से नहीं करेंगे। 2. परमेश्वर ने अपने वादे के एक अनुस्मारक के रूप में आकाश में मेघधनुष रखा।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 8: 1-22; उत्पत्ति 9: 11-16*** ***मुख्य पद : ईफिसियों 2: 8*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने नूह, उनके परिवार और जानवर जो जहाज के अन्दर थे उन्हें याद किया । 2. नूह बहुत आभारी था और जहाज से निकलने के बाद कुछ भी करने से पहले उसने परमेश्वर की आराधना की। 3. परमेश्वर ने पृथ्वी के निवासियों को बाढ़ से फिर कभी भी नष्ट नहीं करने का वादा किया।
पहचान कराने	विभिन्न प्रकार के वादे जो लोग करते हैं उन पर जोड़े में चर्चा कीजिए। क्या लोग हमेशा अपने वादे रखते हैं?	जोड़े में, धन्यवाद कार्ड और उपहारों के बारे में चर्चा करें। लोग उन्हें क्यों भेजते हैं?क्या आपने कभी एक भेजा है? क्यों ?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने नूह और उनके परिवार से बहुतायत संतान उतपन्न करके पृथ्वी पर भरने को कहा। 2. परमेश्वर ने नूह, उसके पुत्रों, सभी जानवरों और पृथ्वी पर जीवित प्राणियों के साथ एक विशेष वादा किया जिसको वाचा कहते हैं। 3. परमेश्वर ने वादा किया कि पृथ्वी के सारे जीवित प्राणियों का विनाश फिर कभी वह बाढ़ से नहीं करेंगे। 4. परमेश्वर ने अपने अनन्त वाचा का अनुस्मारक के रूप में बादलों में एक मेघधनुष रखा। यह हमेशा के लिए रहेगा। वह अपना वादा कभी नहीं तोड़ेंगे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने नूह को एक बड़ी जहाज की निर्माण के बारे में और उस जलप्रलय के लिए तैयारी करने के बारे में विस्तृत निर्देश दिए। 2. परमेश्वर नूह, उनके परिवार और जानवरों को बचाने का वादा किया। 3. बड़ी बाढ़ आई और 40 दिनों तक चली। सिर्फ जहाज के नूह, उनके परिवार और जानवर जो उनके साथ जहाज में थे वही सुरक्षित रहे। 4. बारिश रुक गई और पानी घटने लगी। जहाज अरारात पर्वत पर टिक गया। 5. 40 दिन के बाद नूह ने जहाज के खिड़की खोलकर इक कौआ को उड़ाया जो वापिस नहीं आया। फिर उसने एक कबूतरी को उड़ाया, सूखी जगह न मिलने पर वह जहाज में वापिस लौट आई। सात दिन बाद उसने उसी कबूतरी को जहाज से फिर उड़ा दिया। इस बार वह चोंच में जैतून का एक नया पत्ता लिए उसके पास आई। नूह जान लिया की जल पृथ्वी से घट गया हैं। फिर 7 दिनों के बाद जब उसने कबूतरी को उड़ाया वह फिर कभी लौट कर नहीं आई। पृथ्वी सूख रही थी। 6. परमेश्वर ने नूह से अपने परिवार समेत जहाज से निकलने को कहा और परमेश्वर ने नूह और उनके परिवार से बहुतायत संतान उतपन्न करके पृथ्वी पर भरने को कहा। 7. जहाज से निकल कर सबसे पहले नूह ने परमेश्वर के लिए होमबलि चढ़ाई। 8. परमेश्वर ने नूह, उनके पुत्रों, सभी जानवरों और पृथ्वी पर जीवित प्राणियों के साथ एक विशेष वादा किया जिसको वाचा कहते हैं। 9. परमेश्वर ने वादा किया कि पृथ्वी के सारे जीवित प्राणियों का विनाश फिर कभी वह बाढ़ से नहीं करेंगे। 10. परमेश्वर ने अपने अनन्त वाचा का अनुस्मारक के रूप में बादलों में एक मेघधनुष रखा। यह हमेशा के लिए रहेगा। वह अपना वादा कभी नहीं तोड़ेंगे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	रचनात्मक हो ! एक मेघधनुष पोस्टर की डिजाइन करें। और इसे शीर्षक दें: 'परमेश्वर सदा के लिए अपने वादे रखता हैं'	छोटे समूहों में चर्चा करें फिर पूरे समूह को प्रतिक्रिया दें: यह अध्याय हमें आराधना के बारे में क्या सिखाते हैं ?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** परमेश्वर ने नूह को दिए वादें अनन्त है । परमेश्वर अपने वादे सदा के लिए रखते है। हमारे जीवन में इस से क्या फर्क होना चाहिए?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** नूह परमेश्वर के लिए आभारी था। हमारे जीवन में परमेश्वर की आशीर्वाद के लिए व्यावहारिक तरीके से हम कैसे अपना धन्यवाद व्यक्त कर सकते हैं ?

	A3 – लेवल 3 कहानी 1 - पतरस का जीवन चरित्र विषय: यीशु पतरस को बुलाता हैं।	A3 – लेवल 4 कहानी 1 - पतरस का जीवनकाल विषय: उनका बुलावा।
	बाइबल फोकस: मत्ती 4: 17-22 ***मुख्य पद : मत्ती 4: 19*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु लोगों को उन्हें अनुगमन करने के लिए बुलाता हैं। 2. यीशु की अनुगमन करने का मतलब है पाप से मुड़ना, पश्चाताप करना और उन पर विश्वास करना।	***बाइबल फोकस: मत्ती 4: 17-22; यूहन्ना 1: 35-42*** ***मुख्य पद : मत्ती 4: 19*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. अन्द्रियास और शायद यूहन्ना ने यीशु से पहले मिले थे और उसके चेले बन गए। 2. उन्होंने पाया कि यीशु ही मसीहा और उद्धारकर्ता है।
पहचान कराने	इस तथ्य के बारे में बात करें कि कई खेल या परियोजनाओं में आपको टीमों की आवश्यकता है जो साथ मिलकर काम करते हैं। यीशु अपने स्वर्गीय कर्तव्य का शुरुआत करने जा रहा था। और उसे उन लोगों की जरूरत था जिन्हे वह शिक्षित करे ताकि उनके स्वर्ग वापिस चले जाने के बाद वही लोग उनके कर्तव्य को आगे बड़ा सके।	इस बारे में बात करें कि लोग फुटबॉल टीम, गायक आदि के प्रशंसकों या अनुयायी कैसे बनते हैं। समझाओ कि यीशु ने अपने व्यक्तित्व और शब्दों से लोगों को उनके पास खींच लिए। यह भी समझाएं कि यीशु ने कुछ विशिष्ट लोगों को ही अपने शिष्यों के रूप में बुलाया था।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु का सन्देश **(4:17)** 2. यीशु ने पतरस और यूहन्ना को झील में जाल डालते हुए देखा। 3. यीशु ने उन मछुआरों को बुलाया जो एक झुण्ड में कड़ी मेहनत कर रहे थे क्योंकि उन्हें पता था कि अपना काम करने के लिए इन्हे प्रशिक्षित किया जा सकता है। 4. यीशु के बुलावे पर तुरन्त ही आज्ञापालन करना। 5. यीशु ने याकूब और यूहन्ना को भी बुलाया और तुरन्त ही उन्होंने उनका आदेश का पालन किया। ये पहले चेले थे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यूहन्ना बपतिस्मा ने कहा कि यीशु ही परमेश्वर का मेमना था अन्द्रियास और उसके दोस्त को एहसास हुआ कि वह मसीहा था। **(यूहन्ना 1: 35,41)** 2. अन्द्रियास द्वारा पतरस को यीशु से परिचय कराने का महत्त्व। 3. इस में कोई आश्चर्यचकित नहीं था की जब बाद में मछली पकड़ते समय यीशु ने उनसे मिले और उन्हें पीछे चलने केलिए बुलाया तब उन्होंने तुरंत ही उनका अनुगमन किया। 4. अन्द्रियास की निजी गवाह का उदाहरण । 5. यीशु के साथ एक निजी अनुभव और उसके बारे में दूसरों को बताने का महत्व। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए सवाल:** 1. यीशु ने इन विशेष पुरुषों को ही क्यों बुलाया? 2. आज के समय में परमेश्वर की बुलावे का पालन करने का अर्थ क्या होता है? 3. परमेश्वर की आज्ञापालन करना मुश्किल बनाने वाले मुद्दे क्या हैं ? 4. यीशु ने उनसे क्या वादा किया था? **(4:19** देखें)	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. आप कैसे जान सकते हैं की आपके जीवन में परमेश्वर की एक योजना हैं ? 2. पहले शिष्यों के लिए यीशु की योजना क्या थी? 3. परमेश्वर की योजना जानने के क्या फायदे हैं? 4. अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना के बारें में हम कैसे जान सकते हैं? और हमें कैसा प्रतिक्रिया देनी चाहिए?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. आज के समय में पश्चाताप के अर्थ पर चर्चा करें। 2. पश्चाताप की एक प्रार्थना लिखें और फिर उसे डिब्बा में डाल दें। 3. आज के प्रसिद्ध मसीहीयों की बुलावे के बारे में शोध करें। e.g. डेविड लिविंग्स्टन	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. चर्चा करें की जिस तरीके से हम आज ईश्वर के लिए साक्षी कर सकते हैं। 2. यीशु के कुछ नाम और पदों की एक सूची बनाएं।

	A3 – लेवल 3 कहानी 2 - पतरस का जीवन चरित्र विषय: बड़ी पकड़।	A3 – लेवल 4 कहानी 2 - पतरस का जीवनकाल विषय: उनकी चुनौती।
	बाइबल फोकस: ***लूका 5: 1-11*** ***मुख्य पद :*** ***रोमियों 3: 23*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. चेलों ने यीशु का आज्ञा पालन करना सीखा। 2. यीशु महान और शक्तिशाली है और अलौकिक कर्म करता है 3. किसी को भी जो पश्चाताप करता हैं उनका उपयोग परमेश्वर कर सकता हैं।	***बाइबल फोकस: मत्ती 14: 22-33*** ***मुख्य पद : मत्ती 14:33*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. चेलों ने समझ लिया की यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वह हमारे डर को शांत करने में सक्षम है। 2. यीशु पर विश्वास करने से जीवन में आने वाले तूफानों पर काबू पाने में हमें मदद मिलती है।
पहचान कराने	इस बात के बारे में चर्चा करें कि स्कूलों में कैसे अक्सर इम्तिहान दिए जाते हैं यह देखने के लिए की यदि छात्रों ने उन्हें पढ़ाई गई सबक ठीक से सीखा है कि नहीं। इस वारदात से यीशु अपने चेलों की विश्वास और आज्ञाकारिता की परीक्षा कर रहा था।	समझाओ कि हमारे जीवन एक यात्रा की तरह हैं जो हमारे जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलता हैं। इसके दौरान जीवन में शांती का समय है जब सब आसान होता हैं और तूफ़ान का वक्त भी आता हैं जब जीवन बहुत कठिन हो जाता है।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु पतरस की नाव में बैठकर भीड़ से बात कर रहा था। 2. जब बातें पूरी हुई उसने उन्हें फिर से मछली पकड़ने जाने के लिए कहा । (वे सारी रात मछली पकड़ने की कोशिश करके थके और भूखे थे फिर भी कुछ भी नहीं पकड़ पाए थे। 3. पतरस ने यीशु की आज्ञा के अनुसार किया और उन्होंने बड़ी संख्या में मछलियों को पकड़ा। 4. पतरस ने महसूस किया कि यीशु कितना महान था, और वह कितना मामूली था। **(पद 8)** 5. चेलों ने सब कुछ छोड़ा और यीशु के पीछे हो गया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु ने एक अलौकिक कर्म किया था और वह अपने चेलों को गलील झील के पार भेजता हैं। 2. वह प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर चला गया। 3. चेले एक तूफान में फस गए। 4. यह जानते हुए यीशु समुद्र पर चलकर उनके पास गए। 5. पतरस समुद्र पर चलकर यीशु के पास जाने के लिए अनुमति माँगा। 6. वह डूबने लगता हैं और चिल्लाकर यीशु से मदद मांगता हैं और यीशु उसे बचाता हैं। 7. यीशु में विश्वास रखने के महत्व की व्याख्या करें। 8. समझाओ कि जब हम यीशु पर भरोसा करते हैं तो हमारी जीवन के तूफानों में वह हमें मदद करेंगे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. **पद 5** में शमौन पतरस की जवाब का क्या मतलब हैं ? 2. पतरस की पाप-स्वीकरण से हमें क्या शिक्षा मिलती हैं। 3. पश्चाताप करने का मतलब के बारें में चर्चा करें। 4. यीशु के लिए कैसे हम सभ त्याग सकते हैं?	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. **पद 27** में यीशु के शब्दों हमें कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं? 2. इस अनुभाग में पतरस के उदाहरण से हम क्या सीख सकते हैं? 3. हमारे जीवन में तूफानों का सामना करके हम क्या सबक सीख सकते हैं?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. अगले सप्ताह में यीशु के लिए आज्ञाकारी होने के तीन तरीकों के बारें में लिखे। 2. आपके परिचित किसी मसीही से उस एक समय के बारे में बताने के लिए कहे जब वह भगवान की क्षमा से बहुत सचेत थे।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमारे जीवन की बड़ी तूफानों के बारे में ग्रुप में चर्चा करें। और सोचों कि ऐसे स्थिति में उन पर भरोसा करने से यीशु कैसे हमारे मदद करेंगे। 2. **यशायाह 43:2** पढ़ो, और विचार करो कि यीशु की अनुसरण करने वाले लोगों के लिए यह पद और आज का बाइबिल अध्ययन कैसे जुड़े हैं।

	A3 – लेवल 3 कहानी 3 - पतरस का जीवन चरित्र विषय: यीशु पतरस को बचाया।	A3 – लेवल 4 कहानी 3 - पतरस का जीवनकाल विषय: उसका बयान।
	बाइबल फोकस: मत्ती 14: 22 - 33 ***मुख्य पद : मत्ती 14: 33*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु परमेश्वर का पुत्र हैं। 2. यीशु पर भरोसा करने से जीवन में आने वाले तूफानों पर जीत प्राप्त करके हमारे डर को दूर करने में वह मदद करता है।	***बाइबल फोकस: मत्ती 16: 23-28*** ***मुख्य पद : रोमियों 10: 9*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु 'मसीह' या 'मसीहा' है। 2. पतरस को दिए परमेश्वर का जवाब कलीसिया की नींव है।
पहचान कराने	समझाओ कि हमारे जीवन एक यात्रा की तरह हैं जो हमारे जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलता हैं।	इस तथ्य के बारे में बात करें कि सभी का सबसे बड़ा सवाल यह है कि वास्तव में यीशु कौन हैं। समझाओ कि उन दिन के लोग यीशु के बारे में अलग-अलग जवाब दे रहे थे और फिर यीशु चेलों से पूछता है की वे उनके बारें में क्या सोचता हैं।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु ने एक अलौकिक कर्म किया था और वह अपने चेलों को गलील झील के पार भेजता हैं। 2. वह प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर चला गया। 3. चेले एक तूफान में फस गए। 4. यह जानते हुए यीशु समुद्र पर चलकर उनके पास गए। 5. पतरस समुद्र पर चलकर यीशु के पास जाने के लिए अनुमति माँगा। 6. वह डूबने लगता हैं और चिल्लाकर यीशु से मदद मांगता हैं और यीशु उसे बचाता हैं। 7. यीशु में विश्वास रखने के महत्व की व्याख्या करें। 8. समझाओ कि जब हम यीशु पर भरोसा करते हैं तो हमारी जीवन के तूफानों में वह हमें मदद करेंगे। 9. कठिनायिओं में यीशु पर विश्वास करने के महत्व के बारे में सोचिएँ। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु अपने दौरे की सबसे उत्तरदायी बिंदु पर है। (अध्ययन में दिए नक्शा को देखें) 2. यीशु ने पूछा,'लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?' - चारों जवाबों पर ध्यान दो। 3. फिर उसने पूछा, 'परंतु तुम मुझे क्या कहते हो?' पतरस ने दिए अचानक जवाब को देखो। 4. फिर उन्होंने समझाया कि जो यह विश्वास करते हैं कि यीशु जीवित देवता का पुत्र है उन्ही से कलीसिया बनता हैं। कलीसिया एक इमारत नहीं है लेकिन विश्वास करने वाले लोगों के समूह हैं। 5. यीशु ने फिर कहा कि वह मरने जा रहा है और फिर वह जी उठेंगे। 6. पतरस कहता है कि यह कभी होना नहीं चाहिए। पतरस के इस अनुक्रिया पर प्रभु का जवाब देखिएँ। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. यीशु हमारे भय का सामना करने में हमारी मदद कैसे कर सकता है? 2. युवा लोगों को किस तरह की आम समस्याओं का सामना करना पड़ता है ? 3. यह अध्याय से हमें कैसे मदद मिल सकता है?	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. हम कैसे यकीन कर सकते हैं कि हम वास्तव में यीशु के संपत्ति हैं? 2. हम कलीसिया की हिस्सा कैसे बनते हैं? 3. कलीसिया की हिस्सा होने का महत्व क्या हैं?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्रूस की एक पोस्टर बनाएं। काग़ज़ की छोटे टुकड़ों पर अपनी समस्याएं लिखें और उन्हें कील से क्रूस पर ठोंकिएं। 2. मेघाधनुष का एक चित्र खींचिएँ और बाइबल में से एक वाचा वचन उस पर लिखिएँ।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. अपने कलीसिया के लिए परमेश्वर को धन्यवाद करते हुए व्यक्तिगत प्रार्थनाओं को लिखें। 2. एक व्यक्ति के बारे में सोचो जिसके साथ आप यीशु के सुसमाचार को बाँट सकते हैं।

	A3 – लेवल 3 कहानी 4 - पतरस का जीवन चरित्र विषय: यीशु कौन हैं।	A3 – लेवल 4 कहानी 4 - पतरस का जीवनकाल विषय: पहाड़ पर।
	बाइबल फोकस: ***मत्ती 16: 13-23*** ***मुख्य पद :*** ***रोमियों 10:9*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर के पुत्र यीशु के बारे में हमें गवाही देना चाहिए। 2. यीशु कलीसिया का सिर हैं।	***बाइबल फोकस: मत्ती 17: 1-13*** ***मुख्य पद : 2 पतरस 1: 16-18*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु अद्वितीय है। 2. यीशु मूसा या एल्लियाह से महान है।
पहचान कराने	प्रसिद्ध व्यक्तित्वों के बारे में बात करें और विचार करें कि उन्हें प्रसिद्ध क्यों माना जाता है। यीशु प्रसिद्ध था लेकिन कई लोग अभी भी नहीं जानते थे कि वह वास्तव में कौन था।	उन यादगार अनुभवों के बारे में बात करें जिन्हे बच्चे कभी भूल नहीं सकते हैं। समझाओ कि पहाड़ पर सच्ची महिमा में यीशु को देखने का अनुभव उन तीन चेले कभी नहीं भूलेंगे।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें** 1. यीशु ने पूछा,'लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?' - चारों जवाबों पर ध्यान दो। 2. फिर उसने पूछा, 'परंतु तुम मुझे क्या कहते हो?' पतरस ने दिए अचानक जवाब को देखो। पतरस की बयान और विश्वासियों के लिए इसका क्या मतलब का महत्व समझाओ। 3. फिर उन्होंने समझाया कि जो यह विश्वास करते हैं कि यीशु जीवित देवता का पुत्र है उन्ही से कलीसिया बनता हैं। कलीसिया एक इमारत नहीं है लेकिन विश्वास करने वाले लोगों के समूह हैं। 4. यीशु ने फिर कहा कि वह मरने जा रहा है और फिर वह जी उठेंगे। 5. पतरस कहता है कि यह कभी होना नहीं चाहिए। पतरस के इस अनुक्रिया पर प्रभु का जवाब देखिएँ। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु ने पहाड़ पर रहने के लिए तीन चेले चुन लिए। 2. वह अपनी सारी महिमा और शोभा में मूसा और एल्लियाह के साथ प्रकट होता है। 3. पतरस उनको रहने के लिए तीन मण्डप बनाना चाहता था। परमेश्वर स्वर्ग से उन्हें याद दिलाने के लिए बोलता हैं कि यीशु सबसे से श्रेष्ठ है। 4. चेले डरे हुए हैं लेकिन यीशु उन्हें सान्त्वना देता हैं और बताते हैं कि उनके साथ क्या हुआ है। 5. यीशु की अद्वितीयता और अद्भुत व्यक्तित्व के बारें में समझाएं। 6. अपने जीवन में भगवान को प्रथम स्थान देने के महत्व के बारे में सोचिएं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. पद 22 में पतरस के शब्दों इतने गलत क्यों थे? 2. हमारी कलीसिया परमेश्वर की सेवा करने में हमें बेहतर कैसे बना सकते हैं? 3. हम बेहतर गवाह कैसे हो सकते हैं ताकि हम यीशु की वास्तविकता के बारें में दूसरों को बता सकें ?	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. पतरस को यीशु के रूपान्तरण का साक्षी होना महत्वपूर्ण क्यों था? 2. शिष्यों को इस अनुभव से मिले सीख के बारें में आपका विचार क्या हैं? 3. हम अपने जीवन में यीशु को सबसे प्रथम स्थान कैसे दे सकते हैं?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. एक कलीसिया की रूपरेखा तैयार करके दीवार में प्रदर्शन करिए और उस पर कलीसिया के परिवार के भाग होने के गुणों के बारें में लिखिए। 2. एक व्यक्ति में सोचिए जिससे आप परमेश्वर के बारे में गवाह देना चाहते हैं और फिर उन्हें रोज अपने प्रार्थना में समर्पित कीजिए।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. उन चीजों की एक सूची बनाएं जो हमें यीशु को प्रथम स्थान देने से विचलित करता हैं ? 2. पद 5 कहते हैं 'इस की सुनो।' परमेश्वर आपसे क्या कह रहा है यह सुनने के लिए इस हफ़्ते

	A4 – लेवल 3 कहानी 1 - पतरस का जीवनकाल विषय: प्यार का एक उदाहरण।	A4 – लेवल 4 कहानी 1 - पतरस का जीवनकाल विषय: विनम्रता में सबक।
	बाइबल फोकस: यूहन्ना 13: 1-17 ***मुख्य पद : यूहन्ना 13: 15*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु एक सच्चे दास थे। 2. हमें भी दूसरों की सेवा करनी चाहिए।	***बाइबल फोकस: यूहन्ना 13: 1-17*** ***मुख्य पद : यूहन्ना 13:15*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु परमेश्वर की इच्छा के लिए आज्ञाकारी एक विनम्र सेवक था। 2. किसी भी ईसाई तामील में विनम्रता सबसे महत्वपूर्ण हैं।
पहचान कराने	जिस देश में यीशु रहता था वह गर्म और सूखा था। (उस देश से तुलना करें जहां छात्र रहते हैं) लोगों को धूल भरी सड़कों पर चलने पड़ते थे और जब वे किसी के घर पहुंचते वहां के मालिक यह सुनिश्चित करते कि मेहमानों को भोजन से पहले धोया जाएं। (एक घर में प्रवेश करते समय छात्रों के देशों में प्रचलित सांस्कृतिक मुद्दों के बारे में चर्च करें)	प्रभु यीशु ने ईसाई जीवन के बारे में महत्वपूर्ण सत्यों की व्याख्या अक्सर अपने दृष्टान्तों के माध्यम से की। इस अवसर पर उन्होंने अपने शिक्षण को अपने व्यवहार से प्रदर्शित किया।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यह यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाने के पिछले दिन था और वह अपने चेलों के साथ अपने अंतिम भोजन कर रहा था। 2. किसी ने भी सामान्य रीति-रिवाज़ का पालन करने और उनके पैर धोने की परवाह नहीं की थी। यीशु ऐसा करने के लिए भी तैयार था। **(पद 4,5)** 3. पतरस ने कहा कि वह नहीं चाहता कि यीशु अनके पैरों धोए। 4. यीशु ने समझाया था कि उसे ऐसा करना था अन्यथा पतरस का उसके साथ कुछ भी सांझा नहीं था। **(पद 8)** 5. यीशु पैरों की धुलाई का उपयोग यह दिखाने के लिए कर रहा था कि हम सब पाप से मैले हैं और हमें धोया या हमारे पापों से साफ किए जाना चाहिए। और केवल वह ही ऐसा कर सकता है क्योंकि वह क्रूस पर हमारे लिए अपना जान दिया था। 6. यीशु यह भी दिखा रहा था कि दूसरों की खातिर छोटे काम करने के लिए हमें भी तैयार होना चाहिए। 7. एक दूसरे के पैर धोने के महत्व की व्याख्या करें। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु अपने चेलों के साथ फसह मना रहा था। और वे उन सभी वारदातों को याद कर रहे थे, जब इस्राएलियों मिस्र से निकल आए थे। 2. वह इस भोजन के दौरान था जब उसने उन्हें दो महत्वपूर्ण कार्य कर दिखाया। 3. पहले वह एक दास की जगह लिया और उनके पैर धोया, यह कर के वह उन्हें एक उदाहरण दिखा रहा था कि छोटा काम करने के लिए भी वह तैयार हैं। (मुख्य पद देखो) 4. वह यह भी दिखा रहा था कि हम सभी को अपने पापों से शुद्ध होना चाहिए (वह स्नान करने के उदाहरण का उपयोग करता है। **पद 10)** लेकिन फिर भी हमें दैनिक पैरों को धोने की आवश्यकता है। जैसे एक बार हम मसीही बन जाने के बाद भी हर दिन हम पाप करते हैं और उनकी क्षमा की आवश्यकता होती है। 5. छात्रों को यह समझाने में मदद करने के लिए प्रभु ने जो पतरस से कहा उस पर ध्यान दो। 6. दूबारा उसने रोटी और दाखरस लिया और व्याख्या किया की रोटी उसका शरीर हैं जो क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और दाखरस उस का लहू हैं जो बहाया जाएगा। **(लूका 22:19:20)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. अगले सप्ताह में मसीही एक दूसरे की सेवा करने की व्यावहारिक तरीके के बारें में चर्चा करें। 2. अगले सप्ताह में मसीही एक दूसरे की सेवा करने की व्यावहारिक तरीके के बारें में चर्चा करें। अगले वर्ष कलीसिया के बाहर किसी संस्था की सेवा करने की व्यावहारिक तरीके के बारें में चर्चा करें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. उन तरीकों के बारें में चर्चा करें जिससे हम आज नम्रता का अभ्यास कर सकते हैं। 2. परमेश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान देने के लिए व्यावहारिक तरीके के बारें में सोचिए। 3. एक मसीही के जीवन की खोज करें जो नम्र सेवा के लिए प्रसिद्ध हैं।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. जब यीशु धरती पर था उसने दूसरों की सेवा कैसे कीया? 2. यीशु यह भी सिखा रहा था कि मसीही होने के बाद भी हम पाप करते हैं और हर दिन हमें परमेश्वर की पवित्रीकरण और क्षमा प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. इस घटना से पतरस ने क्या सीखा? 2. हमारे पाप से शुद्ध होने का मतलब क्या है? परमेश्वर के करीब रहने और हमारे जीवन में उसकी इच्छा का पालन करेने के लिए हमें हर दिन क्या करना चाहिए?

	A4 – लेवल 3 कहानी 2 - पतरस का जीवनकाल विषय: उसने अपने प्रभु से इनकार किया।	A4 – लेवल 4 कहानी 2 - पतरस का जीवनकाल विषय: उसने अपने प्रभु से इनकार किया।
	बाइबल फोकस: ***लूका 22: 31-34, 54-62*** ***मुख्य पद :*** ***लूका 22: 31,32*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु की सम्पत्ति होने का एलान करना मुश्किल हैं। 2. हमें हमेशा सच बताना चाहिए।	***बाइबल फोकस: लूका 22: 31-34, 39-62*** ***मुख्य पद : लूका 22: 31-32*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हमें आत्मविश्वास से बचकर यीशु पर भरोसा करना चाहिए। 2. पतरस की तरह हमें अपने पाप के लिए सचमुच खेद होना चाहिए।
पहचान कराने	उन परिस्थितियों के बारे में सोचें जब छात्रों को झूठ बोलना या आधे सत्य बताने का झुकाव हो सकता हैं। सोचिए कि हम कभी-कभी सच कहने में क्यों डरते हैं। समझाओ कि पतरस खुद अपने आप को इस तरह की स्थिति में डाला था।	पतरस ने दावा किया कि वह यीशु को कभी भी नहीं छोड़ेगें, और उसके लिए बन्दीगृह जाने या मरने के लिए भी वह तैयार होगें। (लूका 22:33) हम जानते हैं कि विनाश से पहले गर्व आता है। नीतिवचन 16:18) पीटर के साथ भी उसका विनाशकारी गिरावट से पहले गर्व आया था।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पतरस ने गिरफ्तार करने आए भीड़ को महायाजक के घर तक पीछा किया। 2. वह घर के आंगन में वहां के कुछ लोगों के साथ मिल गए। 3. उनमें से कुछ ने पूछा कि क्या वह यीशु का एक मित्र या अनुयायी है और तीन बार उसने यीशु को जानने से इनकार कर दिया और उनसे झूठ बोला। 4. मुर्गा ने बाँग दी और यीशु ने घूमकर पतरस को देखा तब पतरस को अपने किए का एहसास हुआ। जब यीशु को सबसे ज़्यादा उसकी ज़रूरत और साहसी होने के बजाए वह एक कायर बन गया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पीटर घबड़ाया हुआ होगा। वह जानता था कि यीशु ने उनके इनकार के बारे में क्या कहा था। **(22:34)** लेकिन उसने सोचा कि वह यीशु की सहायता करने के लिए पर्याप्त और मजबूत हैं। 2. जब संकट आया तो वह सच्चाई बताने से बहुत डर रहा था। वास्तव में जैसे यीशु ने कहा था उसी तरह उन्होंने तीन बार यीशु से इनकार किया। 3. इसके बारें में सोचिए कि यीशु को निराश करने पर उसे कैसे लगा होगा। 4. पतरस के परीक्षा की रीति पर चर्चा करें। 5. हम कहाँ जाते है, किसके साथ मिलते हैं और कैसे सोचते हैं, इन सारी चीजों के महत्व पर भी चर्चा करे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. यीशु से जुड़ा होना क्यों मुश्किल होता है? उन कारणों की एक सूची बनाएं और उस सूची के ऊपर एक बाइबल वादा लिखिए। 2. पतरस ने यीशु को निराश किया: क्या उसे माफ किया जा सकता है? 3. पता करें कि दाऊद ने बतशेबा के साथ अपने पाप को कैसे कबूला और उसे बहाल कैसे किया गया। **(2 शमूएल 11, भजन संहिता 51)**	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. उन गुणों की सूची बनाएं जो हमे एक अच्छे दोस्त में खोजना चाहिए। 2. एक मार्ग बताएं जिशसे इस सप्ताह हम यीशु के प्रति वफादार हो सकता है। 3. इस बारे में सोचो कि पतरस को आने वाले घट ना के बारें में चेतावनी देने में यीशु का तात्पर्य क्या था? **(लूका 22:32)**
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. मसीहियों के लिए कभी यह कहना मुश्किल क्यों है कि वे यीशु से सम्बन्ध रकते हैं ? 2. हमें सच कहने से क्या रोकता है?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हम यह कैसे दिखा सकते हैं कि हम अपने पाप के लिए वास्तव में शर्मिन्दा हैं? 2. हम यह कैसे तय करेंगे की किस तरह के दस्तों से हम हर रोज़ मिलते हैं?

	A4 – लेवल 3 कहानी 3 - पतरस का जीवनकाल विषय: यीशु की मृत्यु।	A4 – लेवल 4 कहानी 3 - पतरस का जीवनकाल विषय: दुःख और खुशी में सबक।
	बाइबल फोकस: मरकुस 15: 22-40 ***मुख्य पद : गलतियों 2: 20*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु पापरहित और निर्दोष था। 2. हमारे लिए क्रूस पर यीशु की मृत्यु के लिए हमें आभारी होना चाहिए।	***बाइबल फोकस: लूका 24: 1-12 ; 33-49*** ***मुख्य पद : लूका 24: 46,47*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हमारे उद्धार के लिए यीशु ने हमारे पाप का दण्ड अपने ऊपर ले लिया। 2. यीशु हमें क्षमा और अनन्त जीवन प्रदान करता है।
पहचान कराने	चर्चा करें कि यदि पतरस कि तरह छात्र भी किसी को निराश करते हैं तो वे क्या करेंगें? सोचो कि पतरस ने क्या करने की कोशिश की है और यह कैसे असंभव हो सकता हैं।	समझाओ कि हम वास्तव में यह नहीं जानते कि जब यीशु क्रूस पर था तब पतरस क्या कर रहा था। लेकिन हम जानते हैं कि ईस्टर रविवार की सुबह वह कब्र के पास गया था और बाइबल कहती है कि वह वास्तव में उस दिन यीशु के साथ मिले थे। **(पद 34 देखें)**
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. वर्णन करें कि कैसे यीशु को शहर के बाहर क्रूस पर चढ़ाया जाने के लिए ले जाया गया। 2. विवरण कीजिए कि उसके साथ कैसा व्यवहार किया गया और कैसे उसके चारों ओर के लोग उनका अपमान किया और उसका मज़ाक उड़ाया। 3. व्याख्या करो कि 3 घंटे की अंधेरापन बड़ा असाधारण था और यह वारदात दिखाता हैं कि हमारे पाप के लिए दंडित हो रहे अपने पुत्र को परमेश्वर नहीं देख सकता था। 4. जो पाप का दण्ड हमारे ऊपर आना था वह इस समय यीशु ने अपने ऊपर ले लिया। 5. यह समझाओ की वास्तव में यीशु की मृत्यु होने पर क्या हुआ था। **(पद 38,39)** 6. क्रूस के पास खड़े सूबेदार की प्रतिक्रिया की व्याख्या करें। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. विवरण करें कि ईस्टर की सुबह कैसे स्त्रियाँ कब्र पर गई थी। 2. व्याख्या करो कि उन्होंने वहां क्या देखा और उन्हें क्या संदेश दिए गए। 3. जब पतरस ने यह समाचार सुना तब उसने क्या किया, वर्णन करो **(पद 12)** 4. चर्चा करों की कुछ लोगों को यह विश्वास करना मुश्किल क्यों था कि यीशु जीवित हैं। 5. क्या हुआ जब प्रभु यीशु उनको प्रकट हुआ? विवरण करें। 6. पतरस और उनके साथियों को पुनर्जीवित प्रभु को देखकर बहुत खुशी हुई। 7. यीशु ने अपने पीड़ा को कैसे समझाया? **(पद 45-47)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. इन सब के बारे में सोचो: क्रूस पर यीशु की मृत्यु के महत्व, मुख्य पद की अर्थ, और यह तथ्य कि यीशु हर एक के लिए अपना प्राण दिया था। 2. क्रूस पर यीशु की मौत के फायदे पर चर्चा करें। यीशु की बलिदान का अनुस्मारक के रूप में एक क्रूस को प्रदर्शित करने के लिए एक सही जगह की बारें में सोचिए।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. चर्चा करें कि व्यावहारिक रूप से कैसे दिखा सकते हैं कि हम अपने पापों के लिए क्षमा चाहते हैं। 2. मृत्यु पर यीशु की जीत और उसके पुनरुत्थान के बारें में कुछ शब्द लिखे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. यीशु ने अपना प्राण क्रूस पर क्यों दिया? 2. क्रूस पर यीशु की मृत्यु के लिए हमारे कृतज्ञता हम कैसे दिखा सकते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हम कैसे यकीन कर सकते हैं कि यीशु जीवित है? 2. अनन्त जीवन का क्या अर्थ है? 3. हम कैसे जान सकते हैं कि वाकई में हमे क्षमा मिला हैं?

	A4 – लेवल 3 कहानी 4 - पतरस का जीवनकाल विषय: क्या तुम मुझसे प्यार करता है।	A4 – लेवल 4 कहानी 4 - पतरस का जीवनकाल विषय: प्यार में सीख़।
	बाइबल फोकस: यूहन्ना 21: 1-17 ***मुख्य पद : यूहन्ना 21: 17*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पतरस की तरह जब हम यीशु को निराश करते हैं तो हमें भी माफ़ किया जाएगा। 2. जैसा एक चरवाहा अपनी भेड़ के लिए परवाह करता है यीशु चाहता है कि उसी तरह हम दूसरों को शिक्षा दे और उनके देखभाल करें।	***बाइबल फोकस: यूहन्ना 21: 1-20*** ***मुख्य पद : यूहन्ना 21: 15*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु हमें एक नई शुरुआत देने के लिए तैयार है। 2. हमारी असफलताओं के बावजूद यीशु हमें बहुत प्यार करता है।
पहचान कराने	यीशु की मृत्यु के बाद पतरस फिर से अपना जीवन पुनः आरंभ करने की कोशिश कर रहा है। वह अपने घर और गलील झील में मछली पकड़ने की अपने पूर्व काम के लिए वापस जाता है।	पुनरुत्थान के बाद कई मौकों पर अपने चेलों को प्रकट होकर प्रभु यीशु ने यह साबित कर दिया कि वह मरे हुओ में से जी उठा हैं। (1 कुरिन्थियों 15: 3-8)
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. चेले सारी रात मछली पकड़ने की कोशिश कर रहे थे फिर भी कुछ नहीं पकड़े पाए। वे थके, भूखे और निराश होकर किनारे की और लौट रहे थे। 2. प्रभु यीशु किनारे से उन्हें पुकारते हैं लेकिन वह उन्हें पहचान नहीं पाया। यीशु ने उनसे पूछा यदि उनके पास कोई मछली है। 3. उन्होंने यीशु की आदेशों का पालन किया और नाव की दूसरी तरफ जाल डाला और बहुत अधिक मछली पकड़े। 4. यूहन्ना को एहसास हुआ कि यह यीशु है और पतरस ने शायद उससे मिलने के लिए तैरता हुए गया। 5. यीशु ने उन सभी को नाश्ते के लिए बुलाया और फिर पतरस से पूछा कि यदि वह उससे प्यार करता है। 6. पतरस ने जवाब दिया कि वह उन्हें प्यार करता है और यीशु ने उन्हें अपने अनुयायियों (भेड़) की देखभाल करने का एक नया काम दिया। 7. चर्चा करो की प्रभु ने एक ही सवाल तीन बार क्यों पुछा होगा? 8. सोचों की कैसे भगवान ने पतरस को माफ कर दिया होगा की उसने इतना महत्वपूर्ण काम पतरस को सौंपा। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. उसके पुनरुत्थान के बाद यीशु ने अपने सात शिष्यों को दिखाई दिया, जब वे गलील झील में मछली पकड़ने चले गए थे। 2. मछली की एक बड़ी पकड़ उन्हें देकर यीशु ने साबित कर दिया कि वह कौन हैं। 3. चेलों ने किनारे पर प्रभु के साथ नाश्ता किया। 4. प्रभु यीशु यकीन करना चाहता था कि अपने जीवन के अंतिम घंटों में कई बार उन्हें इनकार करने की उस वारदात से पतरस को असल में पछतावा था। 5. तीन बार पतरस ने दूसरों के सामने परमेश्वर के लिए अपना प्यार व्यक्त किया। 6. अब पतरस को एक चरवाहा बनना था जो नई कलीसिया में परमेश्वर के अनुयायियों की देखभाल करेगा। उसे प्रभु की सेवा करने का दूसरा मौका दिया जा रहा था। 7. हमारी हर हार के बावजूद परमेश्वर हमें प्यार करता है, और वह चाहता हैं की हम भी उससे प्यार करें। 8. बच्चों को याद दिलाओ कि भले ही हम अक्सर परमेश्वर को निराश करते हैं फिर भी वह हमें कभी नहीं छोड़ेंगे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. एक प्रायौगिक तरीके के बारें में चर्चा करें जिससे आप इस सप्ताह यीशु को सुनने के लिए समय बना सकते है। 2. एक प्रसिद्ध मसीही के बारें में खोजिए जिसने यीशु को सुनने और उनके आदेशों की पालन करने के बारें में ज्ञान प्राप्त किया हैं।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. चर्चा करों कि कैसे परमेश्वर के प्यार और क्षमा हमें प्रोत्साहित कर सकते हैं। 2. एक प्रसिद्ध मसीही के जीवन की खोज करें जिसे यीशु ने एक नई शुरुआत दी।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. इस विचार पर चर्चा करे की हमारे लिए जो कुछ भी प्रभु ने किया है उसके लिए हमारे प्रेम को व्यक्त करना कितना ज़रूरी है। 2. समझे कि प्रभु को निराश करने पर भी अगर हम सही तरह से पश्चाताप करते हैं तो हमें एक से अधिक अवसर देने के लिए वह तैयार है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमारे लिए परमेश्वर के प्यार को हम कैसे सराहना कर सकते हैं? 2. हमारे बरताव से हम परमेश्वर के लिए अपने प्यार को कैसे साबित कर सकते हैं ?

	A5 – लेवल 3 कहानी 1 -पतरस का जीवनकाल विषय: पतरस का धर्मोपदेश।	A5 – लेवल 4 कहानी 1 -पतरस का जीवनकाल विषय: पिन्तेकुस्त।
	बाइबल फोकस: प्रेरितो 2: 1-43 ***मुख्य पद : प्रेरितो 1:8*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पवित्र आत्मा को यीशु के अनुयायियों के लिए एक भेंट के रूप में दिया गया है। 2. चेलों का संदेश यह था कि हमें पश्चाताप करके परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करना चाहिए।	***बाइबल फोकस: प्रेरितो 2: 1-42*** ***मुख्य पद : प्रेरितो 2:38*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पिन्तेकुस्त एक यहूदीयों की त्योहार है जो फसह के पचास दिन बाद मनाया जाता हैं। 2. पतरस के प्रचार के बाद, कलीसिया का स्थापना हुआ
पहचान कराने	इसके बारे में चर्चा करों कि छात्रों को उनके जीवन में बड़े बदलाव होने पर कैसा महसूस हो सकता है। नया स्कूल, नया घर और परिवार की परिस्थितियों में बदलाव। विवरण करों कि अब जब कि प्रभु यीशु ने स्वर्गारोहण की, चेलों के जीवन में अब बड़े बदलाव आएंगे क्योंकि प्रभु का काम अब उन्हें पूरा करना हैं।	इस तथ्य के बारे में सोचें कि जन्मदिन, सालगिरह और धार्मिक उत्सव सभी परिवारों में महत्वपूर्ण हैं। आने वाले महीनों में कुछ विशेष दिनों के बारे में सोचो। यहूदी जनता पिन्तेकुस्त की त्योहार फसह (जब वे मिस्र देश को छोड़ और जब मूसा सीनाई पर्वत पर कानून प्राप्त किया) के पचास दिन बाद मानते थे।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. चेलों ने पवित्र आत्मा के आने के इंतजार कर रहे थे जैसे यीशु ने उनसे वादा किया था। **(प्रेरितों 1:8)** 2. जैसे **पद 2,3** में कहा गया था पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन आया था। 3. चेले अन्य भाषाओं में बोलने लगे जिसके वजह से विशेष त्योहार के लिए यरूशलेम आए कई अलग जातियों के लोगों भी समझ सके। 4. कुछ लोगों ने यह भी कहा कि चेलें नशे में थे। 5. पतरस ने पहल लिया और जो कुछ भी हुआ उसके बारें में भीड़ को बताया। वह उन्हें बताता है कि योएल की भविष्यवाणी पूरी हुई और पवित्र आत्मा आ गई हैं। **(योएल 2:28-32)** 6. बिना डर के पतरस उन्हें बताता है कि यीशु की मृत्यु के लिए जिम्मेदार वह सुनने वाले लोग थे लेकिन परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जी उठाया। 7. लोग परेशान थे और पूछने लगे कि वे क्या कर सकते हैं। 8. पतरस उन्हें पश्चाताप करने और बपतिस्मा लेने के लिए कहता है। और उसी दिन तीन हजार लोगों ने विश्वास किया और यीशु के अनुयायी बने। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. प्रभु यीशु का वादा पूरा हुआ जब शिष्यों ने पिन्तेकुस्त के दिन चमत्कारिक तरीके से पवित्र आत्मा को प्राप्त की। 2. व्याख्या करो कि जब पवित्र आत्मा आया तब क्या हुआ था। 3. पतरस ने कहा कि यहूदी जनता यीशु की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार था लेकिन परमेश्वर ने उसे फिर से जी उठाया और उसे स्वर्ग तक ऊंचा किया। और अब उसने पवित्र आत्मा को भेजा था। 4. उस दिन जो लोग ने विश्वास किया वे कलीसिया के पहले सदस्य बन गए। यह उस दिन शुरू हुआ और आज तक जारी हैं। 5. चर्चा करो की जिन लोगों ने विश्वास किया उनके साथ क्या हुआ था। **(पद 38,39 देखें)** 6. जीवन में हुए परिवर्तन को प्रकट करने के लिए उन्होंने क्या किया। **(पद 42 देखें)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. इस बारे में सोचें कि हमे गवाही देने के लिए पवित्र आत्मा शक्ति कैसे देता है। 2. पूरे विश्व में सुसमाचार फैलाने के महत्व पर चर्चा करें। 3. उन तरीकों के बारें में चर्चा करें जिससे छात्र इस सप्ताह परमेश्वर का गवाह बन सकता है। 4. पता लगाओ कि अनेक साल पहले तपस्या या पश्चाताप का रूप कैसे था।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. पवित्र आत्मा के काम के महत्व पर चर्चा करें। 2. एक कलीसिया के अन्दर दृढ़ संगति में होने की फायदों के बारें में चर्चा करे। 3. ऐसी एक कलीसिया की नाम बताएं जो तेजी से बढ़ रहा है और इसकी विशेषताओं पर चर्चा करें। यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. गवाही होने का मतलब क्या हैं? 2. पश्चाताप करने का क्या मतलब है?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. कलीसिया के लिए आज पिन्तेकुस्त इतना महत्वपूर्ण क्यों है? 2. कलीसिया में सिर्फ भाग लेने और एक कलीसिया के अन्दर दृढ़ संगति में होने के बीच का अंतर पर चर्चा करें।

	A5 – लेवल 3 कहानी 2 - पतरस का जीवनकाल विषय: पतरस द्वारा चंगाइ।	A5 – लेवल 4 कहानी 2 - पतरस का जीवनकाल विषय: लंगड़ा आदमी को चंगा।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 3: 1 - 16 ***मुख्य पद : प्रेरितों 3: 6*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. प्रभु यीशु को बिमारी और पीड़ा चंगा करने का शक्ति है। 2. अगर हम उस पर हमारा भरोसा रखते हैं तो वह हमारे जीवन में परिवर्तन ला सकता है।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 3:1-26*** ***मुख्य पद : प्रेरितों 4:10*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर हमें सही समय पर सही जगह पर नियुक्त करता है। 2. लंगड़ा आदमी चेलों की शक्ति से नहीं परमेश्वर की शक्ति के कारण चंगा हुए थे।
पहचान कराने	यीशु ने बताया दयालु सामरी का दृष्टान्त और 'अपने पड़ोसियों को प्यार करने' की सीख को पतरस और दुसरे चेलें कभी नहीं भूलेंगे। **(लूका 10: 25 - 37)** उन्होंने जब इस आदमी को देखा तो उन्हें पता था कि वही करना चाहियें जो यीशु ने किया होगा।	प्रभु यीशु की उपदेशों में से सबसे ख़ास था एक दूसरों की देखभाल करना। वह लगातार अपने चेलों को दुसरों के प्रति खासकर जरूरतमंद के लिए अपने प्यार को प्रकट करता था। उन्होंने कहा कि जब वह चले जाएंगे तब चेलें उससे भी बड़े काम करेंगे। **(यूहन्ना 14:12)**
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पतरस और यूहन्ना प्रार्थना करने के लिए मंदिर जा रहे हैं। 2. वह एक आदमी से मिलते हैं जो चालीस साल पहले अपने जन्म के समय से चलने में असमर्थ था। 3. वह पैसे मांगता है लेकिन पतरस कहते हैं कि उसके पास देने के लिए कुछ बेहतर चीज़ है, वह चंगा हो सकता है। 4. उसने इस आदमी को अपने पैरों में खड़े होने के लिए मदद की और वह कूदना और चलना शुरू करते परमेश्वर की स्तुति करने के लिए मंदिर चला गया। यह प्रथम कलीसिया में पहला अलौकिक कर्म था। 5. जब भीड़ इकट्ठी हुई पतरस ने समझाया कि वह आदमी को चंगा किया गया था। और यह अपनी शक्ति से नहीं परन्तु उस यीशु के नाम पर हुआ जिसे लोगों ने क्रूस पर चढ़ाया था। (पद 16 देखें) 6. पद 16 पर ध्यान दे जो इस आदमी के विश्वास पर जोर देता हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पिन्तेकुस्त के तुरंत बाद पतरस और यूहन्ना प्रार्थना के लिए मंदिर जा रहे थे। 2. जब उन्होंने उस लंगड़ा आदमी को देखा उन्हें पता था कि प्रभु उसके लिए क्या किया होता । 3. विश्वास में पतरस ने उस आदमी को खड़े होने में मदद की। तुरंत वह चंगा हो गया और चलते, कूदते परमेश्वर की स्तुति करते हुए मंदिर जाने से उसने यह साबित भी कर दिया। 4. यीशु के सभी अन्य अलौकिक कर्मों की तरह वह तुरंत ही चंगा हो गया। 5. पवित्र आत्मा के आगमन से अब प्रभु यीशु के सामर्थ्य अपने चेलों में प्रत्यक्ष हो रहा था। 6. पतरस की धर्मापदेश के मुख्य आशयों पर विचार करें। जैसा कि उसने कहा कि यीशु कौन है और वह अभी भी वे क्या कर सकते है। 7. विचार करें कि परमेश्वर अपने चेलों को चंगा करने के लिए कैसे सज्जित कर सकता हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. चंगा होने के चमत्कार के बारे में सोचो और इस तथ्य के बारें में कि सारे बीमार लोग चंगा नहीं होते। 2. पृथ्वी की छोर तक जाके गवाही देने से पहले, ईसाई को पहले अपने घर पर एक गवाह होने की जरूरत है। 3. एक आधुनिक मसीही के बारे में पता करें जिसने चमत्कारिक चंगाई का अनुभव किया है। 4. यीशु पर भरोसा करने पर जो परिवर्तन हमारे जीवन में यीशु लाता हैं उसके बारे में ये चर्चा करें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. चर्चा करें कि यीशु के साथ समय बिताने से हमारे दैनिक काम और गवाही कैसे प्रभावित हो सकता हैं। 2. अन्य ईसाइयों के साथ प्रार्थना करने के लिए समय निकालें और परमेश्वर से हमे उनकी शक्ति से भर कर उनके सेवा करने की अवसर के लिए प्रार्थना करें। 3. परमेश्वर के इनकार करने के बाद से पतरस में इतने क्यों बदलाव आने के कारणों के बारे में सोचिए।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. परमेश्वर सभी बीमार लोगों को चंगा नहीं करने पर आपका क्या विचार हैं? 2. प्रतिदिन परमेश्वर पर हम कैसे भरोसा कर सकते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. आप कैसे जानते हैं कि आप उसी जगह में हैं जहां परमेश्वर चाहते हैं ? 2. हम अपने पाप को क्षमा करने और हमारे जीवन को बदलने के लिए परमेश्वर की स्तुति कैसे कर सकते हैं ?

	A5 – लेवल 3 कहानी 3 - पतरस का जीवनकाल विषय: पतरस की गवाही।	A5 – लेवल 4 कहानी 3 - पतरस का जीवनकाल विषय: पतरस की गवाही।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 4: 1 - 22 *मुख्य पद : प्रेरितों 4: 12* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पवित्र आत्मा ने पतरस के जीवन में एक बड़ा अन्तर लाया। 2. मसीही को प्रभु के लिए समर्थन करना होगा।	*बाइबल फोकस: प्रेरितों 4: 1-31* *मुख्य पद : प्रेरितों 4: 13* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने पतरस को धार्मिक अधिकारियों को गवाही देने के लिए साहस और शक्ति दिया। 2. किसी भी क़ीमत पर दूसरों से यीशु के बारे में बोलने के लिए विश्वासीयों को तैयार रहना चाहिएं।
पहचान कराने	पिछले अध्याय के घटनाओं को संशोधित कीजिए। छात्रों को याद दिलाएं कि कुछ देशों में प्रभु यीशु के पक्ष में खड़े होने के परिणामस्वरूप उत्पीड़न या कारावास भी हो सकता है। पतरस और यूहन्ना को धार्मिक अधिकारियों के उत्पीड़न का सामना करना पड़ा।	पतरस ने एक और महान धर्मोपदेश का प्रचार किया था। (अध्याय 3) विश्वासियों की संख्या लगभग 5000 थी। **(पद 4)** धार्मिक अधिकारियों ने सोचा कि जब प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया गया तो अनुयायीयों की संख्या कम हो जायेंगे। लेकिन अब यह और अधिक हो रहा था!
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. धार्मिक अधिकारियों ने पतरस के संदेश को सुना और वे परेशान हो गए। क्योंकि उन्हें लगता तह की लोगों को सिखाना उनका काम था और पतरस ने यह भी कहा की प्रभु यीशु जीवित थे। 2. पतरस और यूहन्ना को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। 3. अगले दिन उन्हें महासभा का सामना करना पड़ा जैसा कि यीशु ने किया था। 4. वे यह जानना चाहते थे कि लंगड़े आदमी की चंगा करने के लिए पतरस ने किस शक्ति का इस्तेमाल किया था। 5. पतरस ने उन्हें बताया कि यह यीशु के नाम की शक्ति हैं। **(पद 10)** 6. धार्मिक नेताओं पतरस और यूहन्ना के साहस से प्रभावित थे। 7. उन्होंने पतरस से यीशु के बारे में प्रचार बंद करने के लिए कहा। 8. पतरस ने कहा कि उन्हें उन लोगों के बजाय परमेश्वर के आदेश का पालन करना था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पतरस और यूहन्ना को गिरफ़्तार किया गया। 2. महासभा के महत्व पर ध्यान दें। 3. पीटर ने महासभा से कहा कि यह यीशु की शक्ति थी जिसने उस आदमी को चंगा किया था और फिर समझाया कि येशु ही एकमात्र उद्धारकर्ता है। **(पद 12)** 4. पतरस और यूहन्ना का साहस से महासभा आश्चर्यचकित हुई थी। और उनका मानना था कि इस परिवर्तन का कारण यीशु के साथ रहने से हुआ था। 5. उन्होंने उनसे यीशु के नाम पर प्रचार बंद करने की आदेश दिया लेकिन पतरस ने उन्हें बताया कि उन्हें अदालत के बजाय परमेश्वर का आज्ञापालन करना था। 6. पतरस और यूहन्ना अपने साथियों के पास वापस चले गए और एक साथ संदेश को निर्भीकता से बोलने में सक्षम होने के लिए प्रार्थना करने लगे। ध्यान दीजिए कि उनकी प्रार्थना का जवाब कितनी शक्तिशाली तरीके से दिया गया था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. मसीही विश्वास के प्रमुख तथ्य को सारांशित करें जो एक बुनियाद के रूप में काम करेंगें। याद रखें कि प्रभु यीशु ही एक विश्वासी की नींव होना चाहिए। **(पद 12** पर दयान दें) 2. एक प्रसिद्ध ईसाई के बारे में पता करें जो अपने विश्वास के लिए खड़े हुए थे। ड्ड.ढ़ एरिक लिडेल	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. चर्चा करें कि आप अपने विश्वास और गवाह में कैसे निडर हो सकते हैं। 2. पता करें कि मसीही उन जगहों पर विजयी कैसे हो सकते हैं जहां उन पर पीड़ा होता है।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमें यीशु के बारे में दूसरों को बताने से क्या रोकता है? 2. एक विश्वासी के लिए एक 'जीवित पत्थर' होने का क्या मतलब है? **(1 पतरस 2: 4,5)**	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हम पवित्र आत्मा पर कैसे भरोसा कर सकते हैं जिससे हम उनके गवाह बन सके? 2. सुसमाचार का विरोध हमारे विश्वास को कैसे बढ़ा सकता है?

	A5 – लेवल 3 कहानी 4 - पतरस का जीवनकाल विषय: पतरस बन्दीगृह में।	A5 – लेवल 4 कहानी 4 - पतरस का जीवनकाल विषय: बन्दीगृह में।
	बाइबल फोकस: ***प्रेरितों 12: 1-19*** ***मुख्य पद :*** ***1 यूहन्ना 5: 14*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. कष्ट या पीड़ा मसीही को प्रभावित कर सकते है। 2. बाइबल सिखाता है कि परमेश्वर हमें प्यार करता है और जानता है कि हमारे लिए सबसे उत्तम क्या है।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 12: 1-19*** ***मुख्य पद : 1 यूहन्ना 5: 5*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पतरस की तरह सबसे कठिन परिस्थितियों में भी परमेश्वर पर विश्वास करना महत्वपूर्ण है। 2. परमेश्वर असंभव को संभव कर सकता है लेकिन वह बाकी हम पर छोड़ता है।
पहचान कराने	प्रभु यीशु ने कहा था कि जैसे ही दुनिया उसे नफरत करती है तो वे प्रेरितों और सभी मसीही से भी नफरत करेंगे **(यूहन्ना 15:18)** अपने शुरुआती जीवन में यीशु लगभग राजा हेरोदेस द्वारा मारे गए थे अब उनके पोते दूसरे हेरोदेस भी पतरस के साथ वही करने जा रहे थे।	एक बार फिर अपने विश्वास और उसके प्रचार के कारण पतरस बन्दीगृह में है। अपने सुनवाई के पिछले दिन बन्दीगृह में गहरी नींद में होने से पता चलता हैं की उसका विश्वास कितना बड़ा है। क्या पतरस उन शब्दों के सच को समझ लिया जो उन्होंने बाद में लिखा था? **(1 पतरस 5: 7)**
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. राजा हेरोदेस ने याकूब को मार डाला और जब उन्होंने महसूस किया कि यहूदियों इस से खुश थे उसने पतरस को भी गिरफ्तार कर लिया। 2. पतरस फिर से बन्दीगृह में हैं और एक सार्वजनिक सुनवाई की प्रतीक्षा में है। 3. कलीसिया प्रार्थना करने के लिए एक साथ मिलते थे। 4. सुनवाई की पिछली रात को एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह से पतरस को बचने में मदद की। 5. वह उस घर गए जहां उसके साथियों प्रार्थना कर रहे थे। 6. दरवाजा खोलने वाली दासी ने उन्हें बताया कि पतरस वहां था, लेकिन कोई उस की बातों पर भरोसा नहीं किया। 7. आखिरकार उन्हें एहसास हुआ कि भगवान ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया है। 8. विश्वासियों के बीच सच्चे संगति के महत्व पर विचार करें 9. इस के बारें में सोचो कि हमें रोज़ प्रार्थना कैसे करना चाहिए, उम्मीद करो कि परमेश्वर उत्तर देंगें और हमारी जीवन में परमेश्वर कि जो भी इच्छा हैं उसे स्वीकार करें।	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. कलीसिया पतरस के बारे में चिंतित था और उत्सुकता से उसके लिए प्रार्थना कर रही है। 2. पीटर को 16 सैनिकों द्वारा संरक्षित कर के उनमें से दो के साथ उन्हें ज़ंजीरों से बांध दिया था। 3. एक स्वर्गदूत प्रकट होकर उसे उठाया और जंजीरों से उसे मुक्त करके बन्दीगृह से बाहर निकाला। चमत्कारपूर्ण ढंग से पतरस आज़ाद हुआ। 4. पतरस को एहसास हुआ कि यह प्रभु था जिसने उसे मुक्त कर दिया था। 5. उन्होंने पाया कि कलीसिया प्रार्थना कर रहे थे लेकिन वास्तव में विश्वास के साथ नहीं कि परमेश्वर असंभव कार्य भी कर सकते है। 6. यह स्पष्ट था कि परमेश्वर को पतरस के लिए और अधिक काम था। यह अभी उसका मरने का समय नहीं था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें। पाठ 4 को पूरा करें। 1. चर्चा करें कि मसीही के लिए नियमित रूप से प्रार्थना करने के लिए इतना मुश्किल क्यों है। 2. उस समय पर चर्चा करो जब आपको पता चला कि आप परमेश्वर के इच्छा से बाहर हैं। 3. दो बाइबल पद को खोजिए जो परमेश्वर के मार्गदर्शन के बारे में कहते हैं और उन्हें समूह के साथ साझा करें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर से प्रार्थना करने के महत्व के बारे में सोचो। 2. विचार करें कि हमें कैसे उम्मीद से प्रार्थना करके विश्वास करना चाहिए कि वे उत्तर देंगें। 3. एक करीबी दोस्त / रिश्तेदार से पूछिए कि किस प्रकार परमेश्वर ने उनके लिए विशेष रूप से प्रार्थना की जवाब दी है और इसे दूसरों के साथ साझा करें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्यों भगवान के तरीके कभी-कभी एक मर्म लगता है (बहुत से लोग चंगा होता हैं और दूसरों को नहीं) 2. हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को कैसे समझते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हम अक्सर इस बात पर संदेह क्यों करते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब हमारे इच्छानुसार देंगें? 2. किस तरीके से हम जानते हैं कि परमेश्वर की शक्ति हमारे से अधिक है?

	A6 – लेवल 3 कहानी 1 - अब्रहम की यात्रा विषय: परमेश्वर पर भरोसा।	A6 – लेवल 4 कहानी 1 - अब्रहम की यात्राएं विषय: उसका बुलावा।
	बाइबल फोकस: ***उत्पत्ति 12: 1-9*** ***मुख्य पद :*** ***इब्रानियों 11: 8*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. अब्रम एक विश्वासी था। उसने परमेश्वर पर उस वक्त भी भरोसा किया, जब वह नहीं जानता था कि परमेश्वर उन्हें कहाँ ले जा रहे थे। 2. जब परमेश्वर हमें बुलाता है, हमें उस पर भरोसा करना है और उसकी आज्ञा मान कर उनका अनुगमन करना है।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 11: 27-32; उत्पत्ति 12: 1-9*** ***मुख्य पद : प्रेरितें 7: 2-4*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. अब्रम एक विश्वासी था। उसने परमेश्वर पर उस वक्त भी भरोसा किया, जब वह नहीं जानता था कि परमेश्वर उन्हें कहाँ ले जा रहे थे। 2. जब परमेश्वर हमें बुलाता है, हमें उस पर भरोसा करना है और उसकी आज्ञा मान कर उनका अनुगमन करना है। वास्तव में हमें अपनी ज़िंदगी उसको सौंपना चाहिए।
पहचान कराने	बच्चों से पूछों अगर वे अपने पुराने स्कूल छोड़कर कभी एक नए स्कूल में चले गए थे। इस में शामिल चुनौती क्या थी ? (नए दिनचर्या, विभिन्न यात्रा व्यवस्था, नए दोस्त बनाने, नए शिक्षकों से मिलना और सीखने पर आप चर्चा कर सकते हैं)। पूछो अगर बच्चों में से कोई भी अपना घर कभी बदला हैं? इसमें उपस्थित चुनौतियां क्या थी? अब्रम और उसके परिवार के लिए भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जैसे कि भाषा, भोजन, मौसम, रीति-रिवाज और साथ ही पुराने घर के दोस्तों से दूर होना।	बच्चों को यह सोचने के लिए कहें कि वे लंबी यात्रा पर निकल रहें हैं और वो भी एक ऐसे देश में जहाँ वह पहले कभी नहीं गए है और वहां एक घर स्थापित करने की योजना भी हैं। इसमें उपस्थित चुनौतियां क्या हैं? (अब्रम और उसके परिवार के लिए ऐसे करने से जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा वह थे भाषा, भोजन, मौसम, रीति-रिवाज और साथ ही पुराने घर के दोस्तों से दूर होने का) एक कागज पर निम्नलिखित शब्द लिखें: अनिश्चित, चिंतित, उत्साहित, जोर, आशंकित। बच्चों को उन शब्दों को चुनने के लिए कहें, जो इस तरह की स्थिति में वह महसूस कर सकते हैं। फिर उनके इन चुनावों पर चर्चा करें।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने अब्रम से बात की और उससे कहा कि वह अपने परिवार के साथ दूसरे देश चले जाए, जो वह उसे दिखाने वाले थे। यह आसान नहीं था। उन दिनों यात्रा कठिन और धीमा था। उसे कई चीजों कि योजना करना था और अनेक लोगों को अपने साथ ले कर चलना भी था। 2. परमेश्वर ने अब्रम को आशीर्वाद देने के लिए एक विशेष वादा किया। परमेश्वर ने कहा कि वह अब्रम के परिवार को एक बड़ा जाति बनाएगा। और उनके परिवार के द्वारा पृथ्वी पर अन्य सभी लोग भी आशीष पाएंगे। 3. अब्रम अपने भतीजे लूत और उनकी पत्नी सारै के साथ निकल पड़ा। उन्होंने उनके साथ अपनी सारी संपत्ति ले ली। अब्रम 75 साल का था ! 4. कुछ दिनों के लिए यात्रा करने के बाद वे शकेम नामक एक जगह पहुंचा जहाँ प्रभु ने अब्रम को प्रकट हुआ। और कहा कि वह इस देश को अब्रम के परिवार को दे देंगे। 5. अब्रम ने एक वेदी बनाई और परमेश्वर कि आराधना की। फिर वह बेतेल और ऐ के बीच पहाड़ियों में एक जगह की और यात्रा की और वहाँ अपना तम्बू खड़ा किया। फिर उसने परमेश्वर कि आराधना करने के लिए एक और वेदी बनाई। वहां से वह दक्खिन देश की और चला गया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने अब्रम से बात की और उससे कहा कि वह अपने परिवार के साथ दूसरे देश चले जाए, जो वह उसे दिखाने वाले थे। यह आसान नहीं था। उन दिनों यात्रा कठिन और धीमा था। उसे कई चीजों कि योजना करना था और अनेक लोगों को अपने साथ ले कर चलना भी था। 2. परमेश्वर ने अब्रम को आशीर्वाद देने के लिए एक विशेष वादा किया। परमेश्वर ने कहा कि वह अब्रम के परिवार को एक बड़ा जाति बनाएगा। और उनके परिवार के द्वारा पृथ्वी पर अन्य सभी लोग भी आशीष पाएंगे। 3. अब्रम अपने भतीजे लूत और उनकी पत्नी सारै के साथ निकल पड़ा। उन्होंने उनके साथ अपनी सारी संपत्ति ले ली। अब्रम 75 साल का था ! 4. कुछ दिनों के लिए यात्रा करने के बाद वे शकेम नामक एक जगह पहुंचा जहाँ प्रभु ने अब्रम को प्रकट हुआ। और कहा कि वह इस देश को अब्रम के परिवार को दे देंगे। 5. अब्रम ने एक वेदी बनाई और परमेश्वर कि आराधना की। फिर वह बेतेल और ऐ के बीच पहाड़ियों में एक जगह की और यात्रा की और वहाँ अपना तम्बू खड़ा किया। फिर उसने परमेश्वर कि आराधना करने के लिए एक और वेदी बनाई। वहां से वह दक्खिन देश की और चला गया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** अब्रम की हारान से बेतेल तक की यात्रा का एक नक्शा तैयार करें और इस कहानी में उल्लिखित स्थानों के नाम पर उस पर चिन्हित कीजिए। मोरे का बांज वृक्ष और दो वेदियों को चित्र में शामिल करें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** आज के बाइबल अध्ययन के आधार पर उन शब्दों की एक सूची लिखिए, जो अब्रम के मनोभाव को दर्शाता है, जब परमेश्वर ने उसे किसी दूसरे देश में जाने के लिए कहा था।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. अब्रम ने परमेश्वर की आज्ञा मान ली, और उस यात्रा में निकला जिसके बारें में परमेश्वर ने उससे कहा। भले ही यह एक आसान नहीं था। यह हमें उसके चरित्र के बारे में क्या दिखाता है? 2. परमेश्वर पर हमारा विश्वास हमारे दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करना चाहिए, उन परिस्थितियों में भी जो हम पूरी तरह से समझ नहीं पाते हैं ?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. चर्चा करें: अब्रम परमेश्वर के आज्ञा का पालन करता हैं। यह हमें परमेश्वर के प्रति अब्रहम के दृष्टिकोण के बारे में क्या सिखाता है? 2. उन स्थितियों के बारे में सोचों जहां परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। अब्रम का जीवन हमें क्या सिखाता है कि जब हम अनिश्चित, आशंकित या चिंतित महसूस करें, तो हमारे व्यवहार कैसे होना चाहिए?

	A6 – लेवल 3 कहानी 2 - अब्रहम की यात्राएं विषय: चुनाव।	A6 – लेवल 4 कहानी 2 - अब्रहम की यात्राएं विषय: उनका चुनाव।
	बाइबल फोकस: ***उत्पत्ति 13: 1-18*** ***मुख्य पद :*** ***नीतिवचन 3: 5 - 6*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हमारे जीवन में अच्छे निर्णय लेना महत्वपूर्ण है। 2. हमारे जीवन में अच्छे निर्णय लेने में मदद के लिए हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए ताकि हमें उनके मार्गदर्शन मिले और हमारे जीवन की सारे अनुग्रह के लिए हमे परमेश्वर को हमेशा स्तुति और मान देना चाहिए।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 13: 1-18; उत्पत्ति 14: 1-16*** ***मुख्य पद : यहोशू 24: 15*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. अब्रम ने परमेश्वर के मार्गदर्शन और सहायता की मांग की, और उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। 2. हमे हर कार्य में परमेश्वर को स्वीकार के उसकी मदद और मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए। और हमारे जीवन के सारे अनुगरह के लिए उन्हें प्रशंसा और सम्मान देना ह
पहचान कराने	हम सभी हर दिन चुनाव और फैसले लेते हैं। बच्चों से जीवन में बड़े बदलाव लाने केलिए जो हर रोज़, छोटे फैसले हम लेते है उनके बारें में उदाहरण देने के लिए कहें। इन्हें दो सूचियों को एक फ्लिप चार्टपर मिलाएं। हर एक बच्चें को कागज का एक टुकड़ा दो। उसकी एक तरफ हाल ही में बनाई गई एक छोटे फैसले का प्रतिनिधित्व करने वाला एक चित्र खींचिए और दूसरी तरफ, आपको भविष्य के बारे में जो आशा, सपना या महत्वाकांक्षा हैं उसकी प्रतिनिधित्व करने वाले एक चित्र खीचिए। इस बात पर चर्चा करें कि हम सभी के पास फैसले और निर्णय लेने है और इस के लिए हमें सहायता और मार्गदर्शन की आवश्यकता है। हम अपने सभी निर्णयों और विकल्पों के लिए हमें अच्छे मार्गदर्शन देने के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं।	परमेश्वर की सेवा एक इंतिख़ाब है। जो लोग परमेश्वर की सेवा करने का चुनाव करे उन लोगों के जीवन में हम क्या फर्क देख सकते हैं? एक चार्ट पर इनके एक सूची बनाएं और इसे ध्यान में रख कर अब्रम के जीवन के बारें में अध्ययन करें।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. अब्रम वापस बेतेल और ऐ के बीच उस स्थान पर गया जहां उन्होंने पहले भी छावनी लगाई थी। उसने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई जहाँ वह परमेश्वर के नाम पुकारकर प्रार्थना करने के लिए जाता था। 2. अब्रम को एक फैसला करना था। देश में बहुत सारे लोग रहते थे और वे इसके बारे में आपस में झगड रहे थें। हर किसी के लिए जगह काफी नहीं था। इसलिए अब्रम के लिए अपने भतीजे से अलग होकर दूसरे देश में चले जाने का समय आ गया था। 3. अब्रम ने लूत को उस देश का चुनने का मौका दिया जहां वह जीना चाहते थे। 4. लूत ने यरदन के पास की उपजाऊ, अच्छी तरह से सींची हुई तराई को छूना और उसने शहरों के पास रहने का फैसला किया। 5. अब्रम कनान देश में रहता था। 6. जब लूत अपना रास्ता चला गया तो प्रभु ने अब्रम से बात की। और जो भी देश वहां से उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में चारों तरफ अब्रम देख सकता हैं उस सब को उन्हे देने का वादा किया। 7. परमेश्वर अब्रम से उनका वंश को बहुत बड़ा करने का वादा किया। 8. अब्रम ने हेब्रेन में मोरे का बांज वृक्ष के पास रहने के लिए बसे। वहां उसने परमेश्वर को आराधना करने के दो वेदियाँ बनाई। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. अब्रम को एक फैसला करना था। देश में बहुत सारे लोग रहते थे और वे इसके बारे में आपस में झगड रहे थें। हर किसी के लिए जगह काफी नहीं था। इसलिए अब्रम के लिए अपने भतीजे से अलग होकर दूसरे देश में चले जाने का समय आ गया था। 2. अब्रम ने लूत को उस देश का चुनने का मौका दिया जहां वह जीना चाहते थे। 3. लूत ने यरदन के पास की उपजाऊ, अच्छी तरह से सींची हुई तराई को छूना और उसने शहरों के पास रहने का फैसला किया। 4. अब्रम कनान देश में रहता था। 5. जब लूत अपना रास्ता चला गया तो प्रभु ने अब्रम से बात की। और जो भी देश वहां से उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में चारों तरफ अब्रम देख सकता हैं उस सब को उन्हे देने का वादा किया। परमेश्वर अब्रम से उनका वंश को बहुत बड़ा करने का वादा किया। 6. अब्रम ने हेब्रेन में मोरे का बांज वृक्ष के पास रहने के लिए बसे। वहां उसने परमेश्वर को आराधना करने के दो वेदियाँ बनाई। 7. अब्रम एक संघर्ष के समय में जीवित थे। सदोम के दुश्मनों ने, जिस शहर में लूत रहते थे, उस पर हमला किया। उन्हें और उनके साथ कई दूसरे लोगों को पकड़ कर उनकी संपत्तियों को भी लूट लिया। 8. जब अब्रम को इस बात के बारे में पता चला कि वह सेना के साथ गया और दुश्मन पर हमला करके बन्दीकर्ता को हराया और बंधकों को स्वतंत्र किया। उसने सदोम के राजा से कोई भी चुकता धन स्वीकार नहीं किया क्योंकि वह जानता था की परमेश्वर ने उसे अपने दुश्मनों पर विजय प्रदान किया था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें। अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** आज के सबक में कहानी के बारे में एक मुख्य समाचार शीर्षक और पत्र की मुखपृष्ठ में एक लघु लेख लिखिए। लेख में कहानी के सभी महत्वपूर्ण तत्व शामिल होने चाहिए। यह कार्य छोटे समूहों या जोड़े में पूरी की जा सकती है। लेख प्रदर्शित करके और उस पर चर्चा की जा सकती है।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** यहोशू 24:15 पढ़े। इस अध्ययन से जो आपने सीखा उसमें अब्रम ने कैसे दिखाया कि वह परमेश्वर का सेवक था? अध्याय की शुरुआत में दिए गए परमेश्वर के सेवक की विशेषताओं की सूची को देखें। क्या इसमें कुछ है जिसे आप जोड़ने या बदलना चाहते हैं? प्रभु की सेवा करने से आज हमारे जीवन में क्या फर्क होना चाहिए?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** अब्रम ने अपने चुनाव और निर्णयों में परमेश्वर को शामिल किया और परमेश्वर ने उसे आशीर्वाद दिया। अपने जीवन में जरूरी फैसले करते वक्त परमेश्वर से मार्गदर्शन और निर्देश मिलने के बारे में सोचिए।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** हर एक छात्र को कोरा कागज दें। प्रभु की अधिक ईमानदारी से सेवा करने कि एक तरीके के बारें में सोचने की उन्हें चुनौती दें। वे एक निजी प्रार्थना लिख सकते हैं और सबक के अनुस्मारक के रूप में इसे घर ले जा सकते हैं।

	A6 – लेवल 3 कहानी 3 - अब्रहम की यात्राएं विषय: परमेश्वर के वादें।	A6 – लेवल 4 कहानी 3 - अब्रहम की यात्राएं विषय: उनका आत्मविश्वास।
	बाइबल फोकस: ***उत्पत्ति 17: 1-8; 18: 1-15; 21: 1-5*** ***मुख्य पद :*** ***मत्ती 1: 21*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. भले ही अब्रम ने चीज़ो को अपने तरीके से सुलझाने का प्रयास किया था, परमेश्वर ने उसे कभी नहीं छोड़ा। 2. परमेश्वर ने वचन दिया था कि वह कई जातियों के समूह का मूलपिता होगा। इसका मतलब सिर्फ अब्रम को ही नहीं लेकिन इतिहास के लोगों के लिए भी आशीर्वाद होगा। 3. कभी-कभी हम भगवान के वादे पर शक करते हैं क्योंकि वे बहुत ही अविश्वसनीय लगते हैं। हम चीजों को स्वयं सुलझाने की कोशिश करते हैं। यह सबक हमें परमेश्वर के वादों पर विश्वास करने और उनकी पूर्ति की प्रतीक्षा करने के लिए चुनौती देती है।	***बाइबल फोकस: उतपत्ति 15: 1-7; 17: 1-19; 18: 1-15*** ***मुख्य पद : उतपत्ति 18:14*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने अब्रम को वचन दिया था कि उसको एक बच्चा होगा जो उसका उत्तराधिकारी होगा। अब्रम ने परमेश्वर पर विश्वास किया। लेकिन वह और उनकी पत्नी बूढ़े थे और अब भी उनका कोई बच्चा नहीं था। तो उन्होंने खुद को चीजों को सुलझाने की कोशिश की। 2. परमेश्वर ने उसे कभी नहीं छोड़ा। परमेश्वर ने वचन दिया था कि वह कई जातियों के समूह का मूलपिता होगा। इसका मतलब सिर्फ अब्रम को ही नहीं लेकिन इतिहास के लोगों के लिए भी आशीर्वाद होगा। 3. कभी-कभी हम भगवान के वादे पर शक करते हैं क्योंकि वे बहुत ही अविश्वसनीय लगते हैं। हम चीजों को स्वयं सुलझाने की कोशिश करते हैं। यह सबक हमें परमेश्वर के वादों पर विश्वास करने और उनकी पूर्ति की प्रतीक्षा करने के लिए चुनौती देती है।
पहचान कराने	बच्चों से पूछें कि क्या उन्होंने कभी वादा किया है। एक फ्लिप चार्ट पर इन की एक सूची लिखें। कभी-कभी लोग अपने वादे नहीं रखते। इसके क्या कारण हैं? (बच्चों के साथ चर्चा करें) यह पाठ हमें सिखाता है कि भगवान अपने वादों को रखता है, यहां तक कि जब हमें यह असम्भव लगता कि वह करेंगें।	आज के लोगों द्वारा किए गए वादों की एक सूची बनाओ। इस बात पर चर्चा करें कि इस तरह के वादों को किस हद तक रखा गया है या थोड़ा जाता हैं। आज का अध्ययन हमें सिखाता है कि परमेश्वर अपने वादे निबाहते है।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने वचन दिया था कि उन्हें कई बच्चे होंगे। 2. अब्रम और उनकी पत्नी सारै बूढ़े थे और चीज़ो को स्वयं सुलझाने की कोशिश कर रहे थे। 3. भगवान ने हालांकि अपना वादा नहीं तोड़ा वास्तव में उन्होंने अब्रम और सारै के साथ फिर से पुष्टि की। उन्होंने वादा के संकेत के रूप में उन्हें नए नाम दिए - उन्हें अब्रहम और सारा कहा जाएगा। 4. परमेश्वर ने कहा कि वह कई जातियों का पिता होगा। उसने वादा किया कि वह इस देश को अब्रहम और उसके वंशजों को देगा, और वह उनका परमेश्वर होगा। 5. तीन लोग उनसे मिलने आए, अल्लाह उनसे बहुत दयालु था। 6. परमेश्वर ने अब्रहम से कहा कि अगले वर्ष के अंदर उसका पुत्र होगा। जब उसने यह सुना तो सारा हसी क्योंकि वह और अब्रहम बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढ़े हो चुक्के थे। 7. परमेश्वर ने अपना वादा रखा, और सारा ने एक पुत्र को जन्म दिया। 8. अब्रहम और सारा ने अपने बेटे को इसहाक के नाम से बुलाया, जिसका मतलब है 'हंसी' क्योंकि परमेश्वर ने एक अविश्वसनीय वादा पूरा किया था और उन्हें अपने बुढ़ापे में बहुत खुशी दिया था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें। पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने वचन दिया था कि उन्हें कई बच्चे होंगे। 2. अब्रम और उनकी पत्नी सारै बूढ़े थे और चीज़ो को स्वयं सुलझाने की कोशिश कर रहे थे। 3. भगवान ने हालांकि अपना वादा नहीं तोड़ा वास्तव में उन्होंने अब्रम और सारै के साथ फिर से पुष्टि की। उन्होंने वादा के संकेत के रूप में उन्हें नए नाम दिए - उन्हें अब्रहम और सारा कहा जाएगा। 4. परमेश्वर ने कहा कि वह कई जातियों का पिता होगा। उसने वादा किया कि वह इस देश को अब्रहम और उसके वंशजों को देगा, और वह उनका परमेश्वर होगा। 5. तीन लोग उनसे मिलने आए, अल्लाह उनसे बहुत दयालु था। 6. परमेश्वर ने अब्रहम से कहा कि अगले वर्ष के अंदर उसका पुत्र होगा। जब उसने यह सुना तो सारा हसी क्योंकि वह और अब्रहम बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढ़े हो चुक्के थे। 7. परमेश्वर ने अपना वादा रखा, और सारा ने एक पुत्र को जन्म दिया। 8. अब्रहम और सारा ने अपने बेटे को इसहाक के नाम से बुलाया, जिसका मतलब है 'हंसी' क्योंकि परमेश्वर ने एक अविश्वसनीय वादा पूरा किया था और उन्हें अपने बुढ़ापे में बहुत खुशी दिया था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** मुख्य पद पढ़े। उस में दिए प्रश्न का उपयोग करें और एक पुस्तक चिन्ह बनाइए। हर बार जब आप इसे देखेंगे याद रखें कि परमेश्वर अपने वादे हमेशा रखता हैं, यहां तक कि जब वे हमारे लिए अविश्वसनीय लग सकता है।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** हम इस पाठ में परमेश्वर, अब्रहम और सारा के व्यक्तित्व के बारे में क्या सीखते हैं? छात्रों को कागज के एक टुकड़े पर अपने विचार लिखकर चर्चा करने को कहे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या आप परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं? 2. क्या आप उनके वचन में दिए वादे को मानते हैं? 3. यह सबक परमेश्वर पर आपका विश्वास कैसे मजबूत कर सकता है?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या आपके जीवन में ऐसी चीजें हैं जो आपको लगता है कि परमेश्वर के लिए करना असम्भव है? 2. अपने जीवन के हर हिस्से में परमेश्वर पर भरोसा करने कि प्रोत्साहन मिलने के बारें में आप इस अध्ययन में क्या सीखा है?

	A6 – लेवल 3 कहानी 4 - अब्रहम की यात्राएं विषय: प्यार की परीक्षा।	A6 – लेवल 4 कहानी 4 - अब्रहम की यात्राएं विषय: चुनौती।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 22: 1-14 ***मुख्य पद : यूहन्ना 1: 29*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने अब्रहम का परीक्षण किया। उसने अब्रहम को अपने एकमात्र पुत्र का त्याग करने के लिए कहा। अब्रहम ने परमेश्वर आज्ञा का पालन किया और पूरी तरह से उस पर भरोसा किया। 2. परमेश्वर एक महान प्रदानदाता है। उन्होंने इसहाक के स्थान को लेने के लिए एक मेढ़ को होमबलि के लिए प्रदान किया। 3. परमेश्वर ने प्रभु यीशु को हमारी जगह लेने और हमारे पापों से मुक्ति दिलाने के लिए बलिदान के रूप में मरने के लिए प्रदान किया।	***बाइबल फोकस: उतपत्ति 22: 1-19*** ***मुख्य पद : इब्रनियों 11: 17-19*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने अब्रहम का परीक्षण किया। उसने अब्रहम को अपने एकमात्र पुत्र का त्याग करने के लिए कहा। अब्रहम ने परमेश्वर आज्ञा का पालन किया और पूरी तरह से उस पर भरोसा किया। 2. परमेश्वर एक महान प्रदानदाता है। उन्होंने इसहाक के स्थान को लेने के लिए एक मेढ़ को होमबलि के लिए प्रदान किया। 3. परमेश्वर जानता था की अब्रहम ने उसके आज्ञा का पालन किया था। वह परमेश्वर के लिए सब कुछ छोड़ने के लिए भी तैयार था। इस लिए परमेश्वर ने अपने वादे की पुष्टि की। 4. परमेश्वर ने प्रभु यीशु को हमारी जगह लेने और हमारे पापों से मुक्ति दिलाने के लिए बलिदान के रूप में मरने के लिए प्रदान किया।
पहचान कराने	कभी-कभी हम लोगों के बारे में जानने के लिए परीक्षा का उपयोग करते हैं। जो विभिन्न तरह की परीक्षा लोग लेते है उनका एक सूची बनाएं। ऐसी परीक्षाएं लोगों के ज्ञान, समझ, भौतिक क्षमता और व्यवहार के बारे में प्रकट करते हैं। परमेश्वर ने अब्रहम की परीक्षा यह जानने के लिए लिया कि वह वास्तव में उस पर विश्वास करता हैं की नहीं।	आपके जीवन में कुछ चीज़े या कोई व्यक्ति है जिसके भींना आप रह नहीं सकते? अब्रहम के लिए, उनके बेटे इसहाक उन लोगों में से एक रहे होंगे। इसहाक को मिलने के लिए अब्रहम ने लंबे समय तक इंतजार किया था। अगर अब्रहम ने इसहाक को खो दिया थो वह कैसा महसूस करेगें?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने अब्रहम को अपने एकमात्र बेटा इसहाक को बलि देने के लिए कहा, जिसे परमेश्वर ने होमबलि के रूप में वादा किया था। 2. अब्रहम ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया और तीन दिन तक यात्रा करके उस जगह पहुंचे जहाँ परमेश्वर ने उससे जाने के लिए कहा था। 3. जब इसहाक ने अब्रहम से पूछा कि बलिदान के लिए भेड़ कहाँ हैं, अब्राम ने जवाब दिया कि परमेश्वर उसका प्रबंध करेगा। इससे पता चलता है कि अब्रहम को परमेश्वर पर बहुत विश्वास था। 4. अब्रहम पूरी तरह से परमेश्वर के लिए आज्ञाकारी था। वह परमेश्वर के लिए सब कुछ छोड़ने और उसके प्रिय पुत्र का त्याग करने के लिए भी तैयार था। 5. परमेश्वर ने अब्रहम को पुकारा और उससे कहा कि वह अपने बेटे इसाक को नुकसान न पहुँचाने के लिए कहा। 6. परमेश्वर ने इसहाक की जगह लेने के लिए वास्तव में एक बलिदान दिया: एक मेढ़। 7. परमेश्वर ने अपने वादे की पुष्टि की, कि उसके वंश इतना बड़ा होगा कि कोई भी उन्हें गिनने में सक्षम नहीं होंगे। उन्होंने यह भी वादा किया था कि उनके ज़रिए वह पृथ्वी पर सभी वंशों को आशीर्वाद देंगे। 8. परमेश्वर ने हमारे स्थान लेने के लिए अपने एकमात्र पुत्र को 'परमेश्वर का मेमने ' के रूप में भेजा। परमेश्वर पर भरोसा करने से प्रभु यीशु के माध्यम से वह हमें उद्धार देता है। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. परमेश्वर ने अब्रहम को अपने एकमात्र बेटा इसहाक को बलि देने के लिए कहा, जिसे परमेश्वर ने होमबलि के रूप में वादा किया था। 2. अब्रहम ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया और तीन दिन तक यात्रा करके उस जगह पहुंचे जहाँ परमेश्वर ने उससे जाने के लिए कहा था। 3. जब इसहाक ने अब्रहम से पूछा कि बलिदान के लिए भेड़ कहाँ हैं, अब्राम ने जवाब दिया कि परमेश्वर उसका प्रबंध करेगा। इससे पता चलता है कि अब्रहम को परमेश्वर पर बहुत विश्वास था। 4. अब्रहम पूरी तरह से परमेश्वर के लिए आज्ञाकारी था। वह परमेश्वर के लिए सब कुछ छोड़ने और उसके प्रिय पुत्र का त्याग करने के लिए भी तैयार था। 5. परमेश्वर ने अब्रहम को पुकारा और उससे कहा कि वह अपने बेटे इसाक को नुकसान न पहुँचाने के लिए कहा। 6. परमेश्वर ने इसहाक की जगह लेने के लिए वास्तव में एक बलिदान दिया: एक मेढ़। 7. परमेश्वर ने अपने वादे की पुष्टि की, कि उसके वंश इतना बड़ा होगा कि कोई भी उन्हें गिनने में सक्षम नहीं होंगे। उन्होंने यह भी वादा किया था कि उनके ज़रिए वह पृथ्वी पर सभी वंशों को आशीर्वाद देंगे। 8. परमेश्वर ने हमारे स्थान लेने के लिए अपने एकमात्र पुत्र को 'परमेश्वर का मेमने ' के रूप में भेजा। परमेश्वर पर भरोसा करने से प्रभु यीशु के माध्यम से वह हमें उद्धार देता है। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** मुख्य पद हमें सिखाती है कि प्रभु उत्तम बलिदान है। 'परमेश्वर का मेमना' जो दुनिया का पाप उठा ले जाता है। क्या आपने परमेश्वर पर भरोसा करके उन्हें अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया हैं?	**छात्रों के लिए प्रश्न:** अब्रहम ने उस स्थान जहां इस पाठ में ये घटनाएं हुईं थीं उसका नाम 'यहोवा यिरे' (प्रभु उपाय / प्रदान करेगा) रखा। परमेश्वर हमारे लिए कैसे और क्या प्रदान किया हैं?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** अब्रहम ने पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा किया और आज्ञा का पालन किया। इस लिए परमेश्वर ने उसे आशीर्वाद दिया। हम कैसे अब्रहम के उदाहरण का पालन कर सकते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** अब्रहम ने परमेश्वर पर भरोसा करके उनका आज्ञापालन किया तब भी जब उसका विश्वास की परीक्षा लिए गए थे । हम उसके उदाहरण का पालन कैसे कर सकते हैं?

पाठ को अंकन करने शिक्षको केलिए मार्गदर्शन

लेवल 3 पाठः

- हर हफ्ते एक/दो पन्ने को मुख्य रूप से रंग भरने या सवालों के जवाब देने।
- हर हफ्ते 10 अंक निर्धारित किए है और एक महीने में अधिकतम 40 अंक।
- लेवल 1 के बच्चों को अक्सर पढने में तकलिफ हो सकता है इसलिए हम चाहते है कि माता-पिता/ रक्षक/शिक्षक उनके सहायता करे।
- हम हर सवाल केलिए 2 अन्क निर्धारित किए है और शेष अन्क रंग भरने केलिए ऐक अध्याय केलिए 10 अन्क।

लेवल 4 पाठः

- हर हफ्ते 4 पन्ने।
- कहानी पाठ में ही निहित है। बच्चों को पहेली सुलझाने, रंग भरने, मुख्य पद को पूरा करना है।
- 20 अन्क हर हफ्ते केलिए निर्धारित है और एक महीने केलिए अधिकतम 80 अन्क।

बाइबल टाइम के मार्किन्ग

निर्देशः

शिक्षक पहलेः

- पाठ को जाँच कर चिन्हित करे।
- निर्देश अनुसार आवश्यक अन्क है।
- गलत जवाब के पास चिन्हित करे और सही जवाब भी लिखे।
- आन्शिक रूप से सही उत्तर केलिए एक अन्क दे।
- एक महीने के कुल अन्क के दिए हुए जगह में लिखो।

P.O Box - 9, MOOKANNUR P.O., 683577, Ernakulam, KERALA
E-mail : besindia1@gmail.com, www.besweb.com